टुकड़ों को उचित रीति से जोड़ना

बधाइयां !

यदि आपने यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता और प्रभु बनाने का निर्णय ले लिया है, तो आपने मसीह के साथ एक ऐसी अद्भुत यात्रा आरम्भ कर दी है जो कभी ख़त्म न होगी।

मसीही जीवन काफी हद तक एक लम्बी मैराथन दौड़ के समान है न कि एक सामान्य दौड़। भावुकता को मसीह के साथ आगे बढ़ने में हरगिज़ प्राथमिकता न दें क्योंकि जब आप अपने दिन-प्रतिदिन के कार्यों पर नज़र दौड़ाएंगे तो यह भावुकता आपका साथ न देगी।

लम्बी दूरी की मैराथन दौड़ दौड़ने के लिए प्रशिक्षण में अधिक समय देने की आवश्यकता होती है, परन्तु अच्छा प्रशिक्षण निश्चय ही हमारी दौड़ को बेहतर करता है।

ठीक इसी प्रकार से आपकी मसीह के लिए एक श्रेष्ठ दौड़ दौड़ने में, आपको प्रशिक्षण में समय देने की आवश्यकता है। अन्तिम रेखा पर खड़े हुए मसीह को लक्ष्य बनाकर दौड़ें..... और जीतने के लिए दौड़ें !

चेतावनी !

आपके मार्ग में सभी दिशाओं से परीक्षाएं आएंगी ताकि आप दौड़ से बाहर हो जाएं, शायद उनकी ओर से भी जो आपके अतिप्रिय हैं।

परमेश्वर आपको मसीही जीवन में एक विजेता के रूप में स्थापित करना चाहता है, और वह आपकी सफलता के लिए प्रतिज्ञाबद्ध है, और उसका पवित्र आत्मा आपको सामर्थ्य देगा और जीवन की दौड़ में हर मील के फासले पर वह आपकी सहायता करेगा।

परमेश्वर के अस्त्रों का प्रयोग करें

जब एक बार आपने यीशु मसीह में अपने विश्वास को कायम कर लिया है, तो आप इस अद्भुत जीवन के रहस्यों के बारे में भी सीखना चाहेंगे, जिसकी योजना उसने आपके लिए तैयार कर रखी है। जैसे ही आप उसके द्वारा आपके लिए तैयार की गई अद्भुत योजना के ''टुकड़ों'' को उचित रीति से जोड़ लें, परम जीवन जीने के लिए तैयार हो जाएं।

टुकड़ों को जोड़ना

- पवित्र आत्मा
- प्रार्थना
- विश्वास
- संगति
- परमेश्वर का वचन
- आज्ञाकारिता

इन में से हरेक ''टुकड़ा'' एक दूसरे से जुड़ा है, और एक साथ मिलकर आपको परमेश्वर के साथ चलने की सामर्थ्य देता है। जितना अधिक समय आप यह समझने और व्यवहार में लाने में देंगे कि प्रत्येक टुकड़े के बारे में परमेश्वर का वचन क्या कहता है, मसीह के साथ आपकी यात्रा उतनी ही अद्भुत होती जाएगी।

परन्तु, ये टुकड़े तभी ठीक से एक साथ जुड़ेंगे जब ''वर्ग पहेली की रूप-रेखा का ढांचा'' वहां मौजूद होगा। इस उदाहरण में ''रूप-रेखा के ढांचे'' का अर्थ है कि आपने यीशु मसीह में अपने विश्वास को कायम कर लिया है..... और उसकी सन्तानों में से एक हो गए हैं। बिना ''रूप-रेखा के ढांचे'' के इन में से एक भी ''टुकड़ा'' नहीं जुड़ेगा।

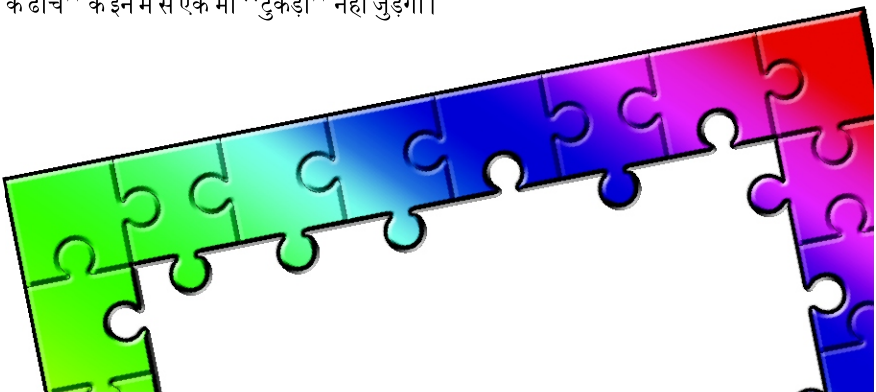

अध्याय एक, परम उद्देश्य मसीह के साथ अनन्तकालीन भविष्य का निर्धारण करने के आपके निर्णय में आपकी सहायता करेगा। हालांकि आपने अपने जीवन में मसीह को आमंत्रित तो किया है फिर भी इस बात की निश्चितता करना आवश्यक है कि आप उसके अधिकार में बने रहेंगे।

1

परम उद्देश्य

अधिकतर लोग बिना इस गहरे विचार के कि कुल मिलाकर जीवन क्या है, अपनी ज़िन्दगी बिता देते हैं। कुछ लोग तो यहां तक सोचते हैं कि जीवन एक सौभाग्य-पूर्ण ''दुर्घटना'' है।

परमेश्वर की अनन्त योजना

क्या आपने कभी यह खोजने का प्रयास किया कि कुल मिलाकर जीवन क्या है ?
आप यहां तक कैसे पहुंचे ?
आप को किस लिए रचा गया था ?
आपकी मृत्यु के पश्चात् आप कहां जाएंगे ?

तो कुल मिलाकर जीवन क्या है ? इसका क्या उद्देश्य है ..... और आप कैसे इस बारे में निश्चिन्त हो सकते हैं कि आपका सृष्टिकर्त्ता बाहें फैलाकर आपका स्वागत करेगा। स्वीकारेगा जब आप उसके सम्मुख आमने-सामने खड़े होंगे.....?

इस अध्याय को पढ़ें, और जानें कि अनन्त काल तक आपके लिए परमेश्वर की अद्भुत योजना क्या है।

सितम्बर 11, सन् 2001 को लगभग 3000 लोग वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर में आतंकवाद की हिंसक घटना के तहत त्रासदीपूर्ण ढंग से मौत के घाट उतार दिए गए। शीघ्र ही उनका सामना उनके रचनाकार से हो गया। अपना दिन शुरु करने से पहले उनमें से किसी को भी यह आभास तक न हुआ होगा कि यह इस धरती पर उनके जीवन का अन्तिम दिन है।

भविष्य में किसी मोड़ पर मैं और आप भी अपने रचनाकार से मिल रहे होंगे। परन्तु तब मसीह के लिए जीने में बहुत देर हो चुकी होगी।

क्या आप अपने रचनाकार का सामना करने के लिए तैयार हैं ? बाइबिल बताती है कि आप तैयार हो सकते हैं। यह बताती है कि आप पूर्णतया इस बारे में निश्चिन्त हो सकते हैं कि जो कोई मसीह पर विश्वास करता है, उसे स्वीकारे जाने की गारण्टी परमेश्वर की ओर से मिलती है।

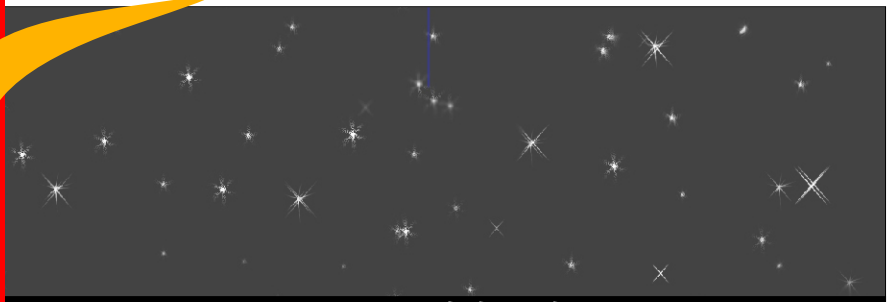

आप यहां तक कैसे पहुंचे

आप एक दुर्घटना मात्र नहीं हैं (भजन संहिता 139:13-18)।

बाइबिल बताती है कि हमारे अद्भुत परमेश्वर ने सब कुछ बिना किसी चीज़ का सहारा लिए रचा..... और यह भी बताती है कि यह सब उसकी ''हस्तकला'' का नमूना था। इस सृष्टि में सम्पूर्ण पृथ्वी भर में पाये जाने वाले रेत के कणों से भी अधिक तारे हैं, तब भी हमारे परमेश्वर का यही कहना है कि उनको एक साथ इकट्ठे करने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण उसके लिए आप हैं।

भजन संहिता 139 हमें यही बताता है कि मनुष्य होने के नाते आप के बारे में परमेश्वर के व्यक्तिगत विचार उन रेत के कणों से अधिक महत्व रखते हैं। वह हर पल मेरी और आपकी चिन्ता करता है।

आपके यहां होने का क्या उद्देश्य है

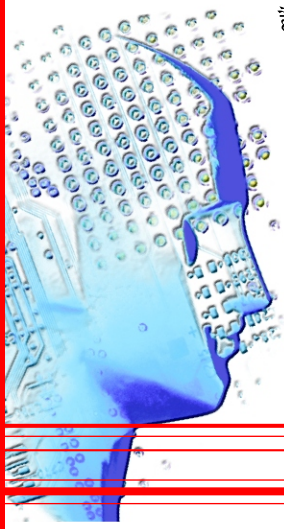

बाइबिल इस बात को प्रकट करती है कि परमेश्वर आपका प्रेमी पिता है, जिसने आपको अनन्तकाल तक उसकी सन्तान होने के लिए रचा और सृजा है। वह चाहता है कि आप उस अद्भुत खजाने को उसके साथ बांट लें जो उसने मसीह में आपके लिए रख छोड़ा है (इफिसियों 1:3-11)।

परमेश्वर चाहता तो वह आपको उस रोबोट के समान भी बना सकता था जिसके सामने उसे प्रेम करने के सिवा और कोई चारा न होता। फिर भी, वह चाहता है कि आप अपनी स्वतंत्र इच्छा के अनुसार ही उसे प्रेम करने और उसकी आज्ञा पालन का चुनाव करें। परमेश्वर ने आपको स्वतंत्र रीति से चुनाव करने का मौका दिया है।

ग़लत चुनाव

इस सृष्टि के पहले मनुष्य, आदम के सामने परमेश्वर की आज्ञा मानने या न मानने का विकल्प रखा गया था। जब आदम ने आज्ञा न मानने के विकल्प को चुना, तो उसके द्वारा स्वार्थी स्वभाव और विद्रोही भावना की त्रासदीपूर्ण बुरी दशा का जन्म हुआ जो आज भी हमारे वर्तमान संसार में एक सामाजिक बुराई के रूप में फैला हुआ है। पाप की उत्पत्ति कैसे हुई, यह जानने के लिए उत्पत्ति की पुस्तक के तीसरे अध्याय को पढ़ें।

प्र रोमियों 5:12 का सन्दर्भ इस बारे में क्या बताता है कि आदम के द्वारा हम तक क्या पहुंचा ?

समस्या तो यही है कि हम सबने अपने जीवन में ग़लत चुनाव किया है।

बाइबिल इन ग़लत चुनावों को..... पाप..... का दर्जा देती है..... जिसका मूल यूनानी भाषा में अर्थ होता है 'लक्ष्य से भटक जाना'..... एक धनुर्धर के समान, जिसका निशाना चूक जाता है।

युद्धों, आतंकवाद, सामाजिक अन्याय, स्वार्थीपन, लालच, ईर्ष्या और बुरी लतों वाले स्वभाव का एक ही कारण है; पाप।

प्र हमने अपना चुनाव करने में जो कुछ किया उसके विषय में यशायाह 53:6 क्या बताता है ?

प्र मनुष्य के मन के विषय में उत्पत्ति 6:5; 8:21 और यिर्मयाह 17:9 व 10 के सन्दर्भ क्या बताते हैं ?

प्र रोमियों 3:23 में, कितनों ने पाप किया है ?

प्र क्या आप भी उनमें शामिल हैं ?

परमेश्वर से अलगाव

बाइबिल बताती है कि परमेश्वर एकदम पाप रहित और पवित्र है और वह उन पापियों को जिनके पाप अक्षम्य हैं हरगिज़ अपनी पवित्र उपस्थिति को दूषित करने की अनुमति नहीं दे सकता। (इब्रानियों 1:13 एवं यशायाह 59:2)

पौलुस ने रोम के विश्वासियों को बताया कि खुलकर विरोध करने वालों और पाप के प्रति परमेश्वर का क्या स्वभाव है :

"परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं"।

रोमियों 1:18

प्र रोमियों 6:23 के अनुसार पाप का दण्ड क्या है ?

अगर हमारा अन्जाम केवल यही होता तो जीवन निराशापूर्ण हो जाता परन्तु हमारे अयोग्य होने के बावजूद भी, हमारे प्रेमी व दयालु परमेश्वर ने हमें आशान्वित रहने और हमारी सहायता के लिए एक मार्ग खोज निकाला।

और..... ऐसा करने के लिए उसने एक बड़ा मूल्य चुकाया.... उसका एकलौता पुत्र !

यीशु मसीह - परमेश्वर की ओर से समस्याओं का समाधान

प्रतिज्ञात मसीह

पवित्र शास्त्र के पुराने नियम में, एक निर्मल और निष्कलंक मेमने को पाप के बलिदान (मेल बलि) के रूप में दर्शाया गया है। यह भेंट आने वाले भविष्य में परमेश्वर के निष्कलंक मेमने, यीशु मसीह की ओर इशारा करती थी, जो हमारे पापों के बलिदान के रूप में परमेश्वर की ओर से योग्य बलिदान ठहरेगा (यूहन्ना 1:29)।

कई सौ सालों से इस्राएल के भविष्यद्वक्ता मसीह के आने की नबूवत करते आ रहे थे (पढ़ें यशायाह 9:6 और 53:1-12, जो कि यीशु के जन्म से 700 साल पूर्व लिखी गई)।

1500 वर्षों से भी अधिक समय के अन्तराल में, लगभग 300 से अधिक विशिष्ट सन्दर्भ उसके आने के बारे में कहे गए। उन सभी का वर्णन पवित्र शास्त्र में है।

यीशु ने भविष्यवाणियों को पूरा किया

पुराने नियम में वर्णित कुछ भविष्यवाणियां यहां नीचे लिखी हैं जो मसीह के विषय में की गई थीं, जिन्हें यीशु ने पूरा किया, उन पर ध्यान दें और उन विशिष्ट भविष्यवाणियों को लिखें जो पूरी हुईं :

पुराना नियम	नया नियम	पूरा होना :
मीका 5:2	मत्ती 2:1	
यशायाह 9:6-7	लूका 1:31-33	
भजन संहिता 22:1	मत्ती 27:46	
भजन संहिता 22:18	मत्ती 27:35	
यशायाह 7:14	लूका 1:35	

इन भविष्यवाणियों में से सिर्फ़ आठ ही शर्तों को पूरा करने में एक व्यक्ति को इतनी बाधाओं का सामना करना पड़ेगा जितना कि किसी व्यक्ति की आंख पर पट्टी बांधकर उसे टैक्सास (फ्रांस के क्षेत्रफल से भी विशाल) से बड़े आकार के क्षेत्रफल के आकार के ऊपर रखे दो फुट ऊंचे चांदी के डॉलरों के ढेर में से एक विशेष चांदी वाला डॉलर उठाने को कहा जाए।

तब भी, यीशु मसीह ने उन सारी भविष्यवाणियों में से दो सौ से भी अधिक भविष्यवाणियों को अक्षरशः पूरा किया..... एकदम वैसा ही ! और उसके पापरहित जीवन ने ही उसको इस योग्य ठहराया कि हम सबके पापों के बदले परमेश्वर ने जिस सिद्ध बलिदान को ठहराया है उसके होने के वह योग्य ठहरे (इब्रानियों 9:14)।

प्र यीशु मसीह आपके लिए कौन है ?

यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया

यीशु ने यह दावा किया कि वह वही ''मैं हूं'' शख्सियत है जो कि परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने बारे में कहा था (निर्गमन 3:14,15; यूहन्ना 8:57-59)।

यीशु ने ''मैं हूं'' के सन्दर्भ में और भी कथन अपने बारे में कहे :

''जीवन की रोटी मैं हूं''	**यूहन्ना 6:35**
''जगत की ज्योति मैं हूं''	**यूहन्ना 8:12**
''अच्छा चरवाहा मैं हूं''	**यूहन्ना 10:11**
''द्वार मैं हूं''	**यूहन्ना 10:9**
''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं''	**यूहन्ना 11:25**
''मार्ग..... सच्चाई..... और जीवन मैं ही हूं''	**यूहन्ना 14:6**
''सच्ची दाखलता मैं हूं''	**यूहन्ना 15:1**

प्र

नीचे लिखे पदों के अनुसार यीशु कौन है ?

यूहन्ना 1:1-14

_____

यूहन्ना 14:9

_____

कुलुस्सियों 1:15-20

_____

इब्रानियों 1:1-8

_____

यूहन्ना 10:30

_____

फिलिप्पियों 2:6-11

_____

कुलुस्सियों 2:9

_____

प्रकाशित वाक्य 22:12-16

_____

सारे प्रमाण स्पष्ट रूप से इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि यीशु मसीह ही परमेश्वर है।

अद्भुत !

वह जिसने इस सृष्टि को रचा मनुष्य रूप में पृथ्वी पर आ गया।

कभी-कभी लोगों के लिए इस बात को स्वीकारना काफी कठिन हो जाता है कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया। 'सन्देही थोमा' भी वैसा ही था। (पढ़ें यूहन्ना 20:24-29)।

प्र किस बात ने उसे विश्वास दिलाया ?

प्र कौन सी बात आपको विश्वास दिलाती है ?

यीशु ने क्रूस पर प्राण त्यागे

धार्मिक अगुवे इस बात को भली-भांति जानते थे कि जो बातें यीशु कह रहा है, उन बातों को केवल परमेश्वर ही कह सकता है और उन्होंने उस पर परमेश्वर की निन्दा करने का आरोप लगाया (यूहन्ना 10:33)। तिरस्कार और व्यंग्य से भरपूर एक मुकद्मे में उन्होंने उसे अपराधी करार दिया और उसे रोमवासियों के हाथों सौंप दिया ताकि उस पर दण्ड की आज्ञा हो।

उसके बाद यीशु को निर्दयता से मारा-पीटा गया, उसके हाथों में कीलें ठोंककर उसे दो डाकुओं के बीच में क्रूस पर लटका दिया गया और फिर उसे एक क़ब्र में दफ़ना दिया गया जिसके चारों ओर कड़ा पहरा था। ऐसा लगने लगा था जैसे सारी आशाएं डूब चुकी हों।

यीशु ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की !

परन्तु, तीसरे दिन वह मृतकों में से जी उठा..... ठीक वैसे ही जैसा उसने वायदा किया था (मत्ती 16:21)। प्रत्यक्षदर्शी गवाहों द्वारा प्रमाणित किए गए ऐतिहासिक प्रमाण, इस बात को साबित करते हैं कि उसके बाद 500 से भी अधिक लोगों ने यीशु को जीवित अवस्था में देखा। (1 कुरिन्थियों 15:3-8) वह आज भी जीवित है !

ऐतिहासिक प्रमाणों की जानकारी के लिए जोश मैकडॉवेल द्वारा रचित 'एवीडेन्स दैट डिमाण्डस् ए वर्डिक्ट' (प्रमाण जो फैसले की मांग करते हैं) पुस्तक पढ़ें या ली स्ट्रॉबेल द्वारा रचित 'द केस फॉर क्राइस्ट' (यीशु पर मुकद्मा) पढ़ें या हमारी वेबसाइट पर लॉग ऑन करें)।

बुद्ध मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं
मुहम्मद साहब मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं
कन्फ्यूशियस मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं

यीशु मसीह जीवित है !

जब यीशु क्रूस पर यातनाओं को सहने के दौर से गुज़र रहा था तब उसके शिष्य भयभीत होकर भाग खड़े हुए थे, परन्तु जब तीन दिनों के बाद उन्होंने उसे जीवित अवस्था में देखा तो उनका हृदय भी असीम साहस से भर उठा, उन्होंने हर प्रकार के भय को त्याग दिया - यहां तक कि तब भी जब बाद में इन्हें इनके विश्वासी होने के कारण यातनाएं, देकर मौत के घाट उतारा जा रहा था।

वाह ! क्या यह अद्भुत बात नहीं ? यीशु मसीह आज भी जीवित है। बाइबिल में यीशु को ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' कहा गया है (प्रकाशित वाक्य 19:11-16) और बाइबिल यह बताती है कि यीशु मसीह इस पृथ्वी पर सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ वापस लौटेगा ! (जकर्याह 14:4; लूका 21:27)।

यीशु ने हमारे पापों का मूल्य चुकाया

पापी मनुष्य **पवित्र परमेश्वर**

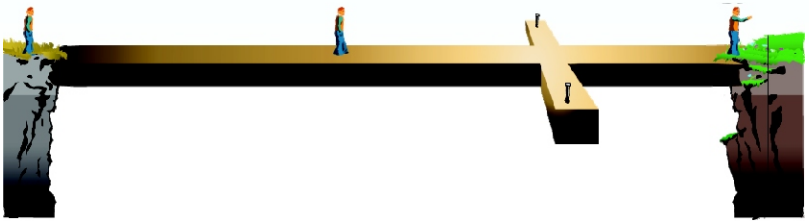

यह उदाहरण दर्शाता है कि किस तरह यीशु का क्रूस आपके और परमेश्वर के बीच एक ''पुल'' बना (इब्रानियों 4:14-16)।

''और किसी के द्वारा उद्धार नहीं ! क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों के काम 4:12)।

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा :

''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं;
बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)।

परमेश्वर की ओर से मुफ्त उपहार

एक अद्भुत सच्चाई यह है कि यीशु ने आप सबके पापों का मूल्य क्रूस पर चुकाया..... और आपको सीधे परमेश्वर से मिला दिया है।

परमेश्वर का सिद्ध न्याय यीशु के लहू के द्वारा पूर्ण सन्तुष्टि प्रदान करता है। उसने आपको ''खरीद लिया है'' और ''वापसी'' की कोई गुंजाइश नहीं ! (इब्रानियों 7:25; 9:12) हो सकता है आप इस बात पर आश्चर्य करें, ''उन सभी भले कामों का क्या जो मैंने अपने जीवन में किए हैं ?''

प्र निम्नलिखित पदों में आपके उद्धार का उत्तरदायी कौन है ?

	आप	यीशु
रोमियों 5:8	☐	☐
इफिसियों 2:8-9	☐	☐
तीतुस 3:5-6	☐	☐
1 पतरस 3:18	☐	☐

अनन्त जीवन परमेश्वर द्वारा दी गई एक भेंट है
आप इसे पाने के लिए स्वयं कुछ नहीं कर सकते !

हालांकि, दूसरी अन्य भेंटों की तरह, आप इसे स्वीकारने या ठुकराने का चुनाव कर सकते हैं।

चयन के लिए आप स्वतंत्र हैं !

परमेश्वर के परिवार में कैसे शामिल हों

प्र यदि आप सितम्बर 11,2001 में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर में हुए हादसे का शिकार हुए लोगों में से एक रहे होते, तो आपने परमेश्वर को क्या उत्तर दिया होगा जब परमेश्वर ने आपसे यह प्रश्न किया होगा, ''मैं तुम्हें अपने स्वर्गीय राज्य में क्यों प्रवेश करने दूं?''

प्र 1 यूहन्ना 5:11-13 तथा यूहन्ना 3:15-18 के अनुसार, स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त करने की आवश्यक योग्यता क्या है ?

मूल यूनानी भाषा में ''विश्वास'' शब्द का अर्थ होता है :

विश्वास करना; चिपके रहना; भरोसा करना

दूसरे शब्दों में, मूल यूनानी भाषा में ''विश्वास'' एक सक्रिय भरोसा रखना है..... काफी हद तक यह विश्वास इस भरोसे जैसा होता है जो पर्वतारोहियों को अपनी सुरक्षा रस्सी पर होता है, जो उनको बांधे रखती है।

मसीही होने का अर्थ है कि आप इस बात में अपना विश्वास कायम कर लें कि मसीह ने क्रूस पर आपके लिए जान दी और आपके अनन्त जीवन की प्राप्ति उसके पुनरुत्थान में है।

विश्वास बनाम भावनाएं

मसीहियत का तात्पर्य मसीह के साथ सम्बन्ध स्थापित करना है - जिसका आधार मात्र विश्वास है !

आपका विश्वास बाइबिल में वर्णित तथ्यों पर आधारित होना चाहिए न कि भावना प्रधान ! (2 तीमुथियुस 3:16)

हो सकता है मसीह में विश्वास आपको भावुक कर दे..... और कभी-कभी होता भी ऐसा ही है। परन्तु, भावनाओं में बदलाव तो स्वाभाविक है, आप केवल उन्हीं पर भरोसा नहीं कर सकते। परमेश्वर अपने वचन में जो कुछ कहता है, आप केवल उसी पर भरोसा कर सकते हैं !

उसकी क्षमा को ग्रहण करना

आपके द्वारा अपने जीवन में लिया गया सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकारना।

यीशु के पास आने का अर्थ सांसारिक चीज़ों का ''त्याग करना'' नहीं है बल्कि उसकी क्षमा को विश्वास द्वारा ग्रहण करना है।

व्यक्तिगत निमंत्रण

अपने पापों के लिए परमेश्वर की क्षमा को ग्रहण करने के लिए, आपको व्यक्तिगत तौर से यीशु मसीह को अपने जीवन में आमंत्रित करना आवश्यक है (यूहन्ना 1:12)। परमेश्वर आपके विचारों और इरादों को जानता है। उसकी इच्छा है कि आप विश्वास की भरपूरी और दीनता के साथ उसके पास आएं, उसका धन्यवाद करें कि आपके लिए उसने क्रूस पर अपनी जान दी।

आप मसीह को अपने जीवन में व्यक्तिगत रूप से आकर आपके पापों को क्षमा करने को कहकर, उसे अपने जीवन में ग्रहण कर सकते हैं। बहुत ही साधारण तरीके से निम्न शब्दों को अपनी प्रार्थना में कहें, इस विश्वास के साथ कि वह आपको उत्तर देगा।

''प्रिय प्रभु यीशु, मेरे अतीत, वर्तमान और भविष्य के सब पापों के लिए क्रूस पर अपनी जान देने के लिए आपका धन्यवाद हो। मुझे उस अनन्त जीवन को देने के लिए जिसे आपने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा मेरे लिए सम्भव किया, आपका धन्यवाद हो। मैं विश्वास के साथ आपको अपना मुक्तिदाता ग्रहण करता हूं, और मेरी इच्छा है कि मेरे इस जीवन के प्रभु आप बनें''।

दिनांक :

प्र क्या आपने व्यक्तिगत रूप से कभी यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित किया है ? यदि हां तो कब ?

मृत्यु के पश्चात् आप कहां जाएंगे

प्र यदि आपके जीवन में यीशु मसीह है, तो दूसरी कौन सी चीज़ के प्रति आप आश्वस्त हैं ? (1 यूहन्ना 5:11-13)

प्र जब एक बार आपने मसीह में अपने विश्वास को कायम कर लिया है, तो क्या और कोई चीज़ ऐसी है जो परमेश्वर के प्रेम से आपको अलग कर सकती है ? (रोमियों 8:38,39)

प्र क्या मसीह आपको कभी त्यागेगा ? (इब्रानियों 13:5) _____

प्र परमेश्वर आपके पापों को कब तक क्षमा करेगा ? (इब्रानियों 8:12)

यदि आपने अपने विश्वास को मसीह यीशु में कायम कर लिया है, तो आपकी नियति अनन्त काल को है..... सर्वदा !

परमेश्वर की सन्तान होने के नाते वह हमेशा आपसे प्रेम रखेगा - यहां तक कि तब भी जब आप उसके प्रति असफल हो जाएंगे। वह आपको कभी भी नहीं त्यागेगा - यहां तक कि तब भी जब आप उसे त्याग दें। इस दौड़ में दौड़ना बन्द न करें।

मसीह में आपकी विरासत

मसीही होने के नाते आपको एक अद्भुत विरासत मिली हुई है :

- आपके अपराध पूरी तरह क्षमा किए गए हैं। (कुलुस्सियों 2:13,14)
- आप परमेश्वर की सन्तान बन चुके हैं - हमेशा के लिए (यूहन्ना 1:12)
- वास्तव में मसीह आपके जीवनों में प्रवेश कर चुका है। (प्रकाशित वाक्य 3:20)
- पवित्र आत्मा ने आपकी ज़िम्मेदारी ली हुई है। (2 कुरिन्थियों 1:22)
- मसीह आपको अपना सा स्वभाव प्रदान करता है। (2 कुरिन्थियों 5:17)

इन पदों को पढ़ने के लिए समय निकालें जो आपको आपकी अद्भुत विरासत के बारे में बताते हैं, और इसे आपको देने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें।

मसीह के लिए जीना

समय बीतने के साथ, मसीही विश्वास का प्रतिफल परमेश्वर के वचनों को आज्ञाकारिता के साथ मानने में मिलता जाता है, तब भी जब जीवन उतार-चढावों से होकर गुज़र रहा होता है (याकूब 2:17)। हालांकि, बाइबिल बताती है कि मसीही जीवन एक युद्ध भूमि के समान है।

शैतान आपके जीवन में रुकावट डालने का प्रयास करेगा।
संसार इस सबके बदले आपको आसान वस्तुओं का प्रलोभन देगा।
आपकी अपनी अभिलाषाएं आप पर प्रहार करेंगी।

शैतान : शैतान एक दुष्ट विरोधी है जिसका उद्देश्य मसीह के साथ आपकी यात्रा को बिगाड़ते रहना है। बाइबिल उसे ''गर्जने वाले सिंह'' का नाम देती है जो हमेशा विश्वासियों को नाश करने की ताक में लगा रहता है। उसका सबसे बड़ा हथियार आपको परमेश्वर के वचन से दूर कर देना है .... और मसीह पर से आपकी निर्भरता को भी.... उसके बाद वह सन्देह और रुकावटों के शस्त्रों को भी प्रयोग में ला सकता है। आपको इससे डरने की ज़रूरत नहीं है। वह केवल तब ही आपको हरा सकता है जब आप इसे हराने का अवसर दें। युद्ध के लिए तैयार हो जाएं (इफिसियों 6:10-18)।

संसार : हालांकि आर्थिक और भौतिक सफलताओं को पा लेने में कोई बुराई नहीं है, बहुत ही आसान है कि सम्पत्ति और सफलताओं के प्रति इतना अधिक ध्यान केन्द्रित कर लिया जाए, कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के आगे परमेश्वर का स्थान दूसरा हो जाए। परमेश्वर आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता बनने के लिए आपके जीवनों में आपका ध्यान उसकी ओर केन्द्रित करना चाहता है..... और आप केवल तभी पूरी तौर से सन्तुष्ट हो सकते हैं जब आप उसे उसका उचित स्थान दें (मत्ती 6:33)।

''शारीरिक'' अभिलाषाएं: हम प्रतिदिन तस्वीरों और इच्छाओं के हमलों का सामना करते रहते हैं जो कि परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हैं। इनमें विवाह से पूर्व यौन सम्बन्ध, अफवाहें, क्रोध, बुरी आदतें और अन्य नाशमान व्यवहार जैसी परीक्षाएं शामिल हैं (गलतियों 5:17)।

जैसे-जैसे आप मसीह में उन्नति करते जाते हैं, आपको इन हमलों पर विजय प्राप्त करने का अधिक से अधिक अनुभव प्राप्त होता जाता है। मसीह में आपकी उन्नति और परीक्षाओं पर आपका विजय प्राप्त करना काफी हद तक आपके द्वारा परमेश्वर की उन्नति की योजना पर अमल करने पर निर्भर करता है। मसीही जीवन में या तो आप बढ़ते जाते हैं या घटते जाते हैं।

परमेश्वर की योजना अर्थात् आपका विकास

मसीही होने के नाते आपके लिए परमेश्वर की उन्नति योजना निम्न प्रकार से है :

आत्मा में होकर चलना। (पवित्र आत्मा-अध्याय 2)
अपने जीवन में परमेश्वर पर विश्वास। (विश्वास - अध्याय 3)
परमेश्वर के वचन को जानना और उस पर विश्वास करना। (परमेश्वर का वचन - अध्याय 4)
परमेश्वर से प्रार्थना करना। (प्रार्थना - अध्याय 5)
अन्य मसीहियों क साथ संगति रखना। (संगति - अध्याय 6)
मसीह की आज्ञाओं का पालन करना। (आज्ञाकारिता - अध्याय 7)

टुकड़ों को जोड़ना

जैसे-जैसे वर्ग पहेली के टुकड़े जुड़ते जाते हैं मसीह के साथ परम जीवन अपना आकार ग्रहण करने लगता है।

अतः ..... क्या आप दौड़ को दौड़ने के लिए तैयार हैं ?
जबकि इसका अर्थ है कि दिशाओं में बदलाव ?

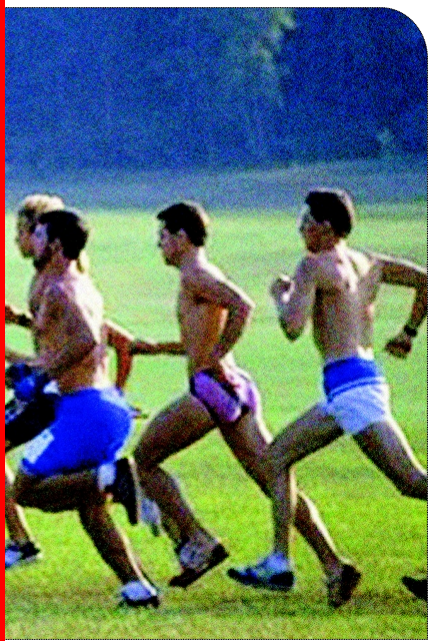

यदि आप मसीह के साथ अपने इस नए सम्बन्ध में विकास करने के विषय में गम्भीर हैं, तो आगामी अध्यायों को पढ़ने में समय बिताएं - बाइबिल के पदों पर विचार करें - और परमेश्वर को बताएं कि आप उस अद्भुत जीवन को जीना चाहते हैं जिसकी योजना उसने आपके लिए तैयार की हुई है।

और..... जीतने के लिए दौड़ें !

आगामी अध्यायों में आप यह सीखने पाएंगे कि इस ''वर्ग पहेली'' का प्रत्येक ''टुकड़ा'' किस तरह मसीह में आपकी उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कार्य करता है।

2

आपके लिए.....
परमेश्वर की अद्भुत भेंट
पवित्र आत्मा

जब आप दौड़ दौड़ते हैं, जैसे कि मैराथन दौड़, तो यह आप की जीत या हार की दौड़ होती है..... वह भी बिना किसी सहायता और उत्साहवर्द्धन के।

मसीह के लिए जीना भिन्न है।

जब पुनरुत्थान के बाद यीशु ने इस जगत को छोड़ा तो उसने अपने शिष्यों को उस ''प्रतिज्ञा'' की बाट जोहते रहने को कहा जो वह अपने पिता के यहां से उन्हें भेजेगा।

''और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा''।

लूका 24:49

पवित्र आत्मा के विषय में बाइबिल में बहुत सी बातें कही गई हैं, परन्तु आपके जीवन में उसकी मुख्य भूमिका, उस का, आप का ''प्रोत्साहक और सहायक'' होना है जबकि आप मसीह के साथ अपनी नयी और अद्भुत यात्रा पर रवाना होते हैं।

यूहन्ना 16:7-15

उसके बिना, मसीह के लिए जीना असम्भव है। उसमें होकर आप मसीह के द्वारा कुछ भी और सब कुछ कर सकते हैं!

(फिलिप्पियों 4:13) अध्याय 2 तथा 3 आप को दर्शाएंगे कि कैसे।

परम मित्र

(पवित्र आत्मा भाग एक)

अन्दर वास करने वाला पवित्र आत्मा

जब आपने यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता और प्रभु होने का निमन्त्रण दिया, तो वास्तव में तभी वह आपके जीवन में प्रवेश कर गया - और वह सर्वदा आपके साथ रहेगा। आप कभी भी अकेले नहीं होंगे।

''और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे.....''।

इफिसियों 3:17

आपका आमंत्रित मेहमान और प्रभु होने के नाते, यीशु आपके ''घर'' के प्रत्येक ''कमरे'' में ''भली प्रकार वास'' करने की इच्छा रखने लगता है। वह प्रकाश, जीवन का संगीत, गर्मजोशी ले आता है। मसीह आपके भीतर पवित्र आत्मा के वैयक्तिक रूप में वास करता है। सन्दर्भ पुस्तिका माई हार्ट, क्राइस्टस् होम (मसीह का घर, मेरा दिल) पढ़ें।

पवित्र आत्मा कौन है ?

हालांकि पवित्र आत्मा को कोई देख नहीं सकता, वास्तव में वह एक वास्तविक व्यक्ति है - यीशु का आत्मा (यूहन्ना 14:16-21)

प्र ये पद पवित्र आत्मा के विषय में क्या कहते हैं ?

प्रेरितों के काम 5:3,4

_____

यूहन्ना 14:16,17

_____

1 कुरिन्थियों 6:19

_____

हां, बाइबिल स्पष्ट रूप से वर्णन करती है कि पिता, और पुत्र के समान ही, पवित्र आत्मा परमेश्वर है ! त्रिएक के रूप में एक परमेश्वर।

यंग लाइफ के संस्थापक जिम रेबर्न ने कहा था, ''मेरा सारा जीवन पूरी तरह से बदल गया जब मैंने पाया कि पवित्रात्मा एक वास्तविक व्यक्ति है - परमेश्वर मेरे जीवन में रहकर मेरे लिए वे कार्य कर रहा है, जिन्हें मैं स्वयं कभी नहीं कर सका''।

पवित्र आत्मा आपके जीवन के उस हरेक क्षेत्र को अपना लेगा जिसकी ज़िम्मेदारी आप उसे सौंपेंगे और वह उन टुकड़ों को आपके लिए बेहतरीन ढंग से परमेश्वर की अद्भुत छवि के रूप में जोड़ देगा।

पवित्र आत्मा क्योंकर आपके भीतर वास करता है ?

आपको नया स्वरूप देने के लिए

''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है :
पुरानी बातें बीत गईं; देखो,
वे सब नई हो गईं''। 2 कुरिन्थियों 5:17

अब आप पूरी तौर से नई सृष्टि हैं - बिल्कुल उस नई तितली की तरह जो पहले एक प्यूपा थी।

हो सकता है कि आप बाह्य या भौतिक रूप से नयापन नहीं महसूस करें ..... या नया काम नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में आप पूरी तरह से नये हो चुके होते हैं !

पिता आपको उस एकमात्र रूप में देखता है जिसे उसके प्रिय बेटे ने अपने लहू का दाम देकर मोल लिया है। आप उसके राजसी पुत्र की भांति हैं। (इब्रानियों 2:9-11)

आपका परम मित्र

बाइबिल आपको बताती है कि यीशु आपका सबसे अच्छा मित्र है। (यूहन्ना 15:15)

प्र आप एक मित्र में कौन सी विशेषताएं देखते हैं ?

_____

_____

_____

_____

_____

ऐश्ले की कहानी

''मैंने हमेशा अपने दोस्तों को परमेश्वर से ऊपर दर्जा दिया। वास्तव में मेरा जीवन मेरे दोस्तों के चारों ओर इतना बीता कि मैंने बस किंचित दूसरों के प्रति 'नम्र स्वभाव' जताने के लिए लापरवाही भरे कार्यों में पड़ना शुरु कर दिया''।

''शीघ्र ही मैं नशीले पदार्थों का सेवन, मदिरा पान एवं यौन सम्बन्धों की लतों में लिप्त होता चला गया। मेरा जीवन नियन्त्रण से बाहर हो गया था और मैं अपने को बेकार सा महसूस करने लगा, बिना किसी उद्देश्य के ''ऊंची उड़ानों'' को मैं भरने लगा। यहां तक कि मैंने अपने इन दोस्तों को भी खो दिया, वे मुझे ''कूड़ा'' के नाम से पुकारने लगे थे''।

''एक दिन किसी ने मुझे बताया कि यीशु मसीह ने न केवल मुझे रचा है, बल्कि वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त भी बनना चाहता है। पहले तो मैं इस बात पर विश्वास न कर सका। बाद में मैंने उसे अपने जीवन में आ जाने को कहा। तब से परमेश्वर ने मुझे जीवन में एक नया उद्देश्य दिया है और मुझे मेरी लतों को छोड़ देने में मेरी सहायता की है। अब मेरे नये बहुत से दोस्त हैं, लेकिन उन सबसे बढ़कर महान् यीशु मसीह है। वह मुझे इसी रूप में स्वीकार करता है, जिससे मेरी पहचान है कि मैं कौन हूं, और मुझे बताता है कि वह मुझे कभी नहीं छोड़ेगा और न त्यागेगा'' (इब्रानियों 13:5)।

कोई दूसरा मित्र आपको इतना प्यार नहीं करता या आपसे इतनी अधिक घनिष्ठता नहीं बनाये रख सकता (नीतिवचन 18:24)। यीशु पूरी तौर से वफ़ादार और विश्वास पात्र है (नीतिवचन 20:6)।

मसीह की समरूपता में

परमेश्वर की अद्भुत योजना आपको मसीह के स्वरूप में बदल देने की है (रोमियों 8:29)। आप में बसी यीशु की आत्मा ने इस बदलाव को लाना शुरु कर दिया है और वह अपने कामों को आपके जीवन में जीवन भर करता रहेगा (फिलिप्पियों 1:6)।

प्र फिलिप्पियों 2:13 के अनुसार यह किसका कार्य है ?

लक्ष्य को समय से पूर्व बाधित कर देने वाली परीक्षा

जब अन्तरिक्ष यान एक बार छोड़ दिया जाता है तो लक्ष्य प्राप्ति में सम्भावी गम्भीर खतरों को समय से पूर्व नष्ट कर देने में बहुत देर हो चुकी होती है। जबकि अब मसीह के साथ आपकी शुरुआत हो चुकी है तो लक्ष्य प्राप्ति में आने वाले सम्भावित खतरों से आपको सावधान रहने की आवश्यकता है।

जीवन के आनन्द आपको प्रलोभन की अपनी मोटी पर्त में ढांप लेंगे। आपके अपने हार्मोन्स (उत्तेजना उत्पन्न करने वाले तत्व) और आपकी अपनी लालसाएंअपनी पूर्ति के लिए लालायित रहेंगे।

उन अस्थायी खुशियों का मसीह के साथ..... आपके लक्ष्य प्राप्ति और प्रचार कार्य को समय से पूर्व नष्ट करके ..... दौड़ से आपको विमुख कर देने में कोई महत्व नहीं है !

चेतावनी

शैतान आप से यह कहकर, ''परमेश्वर तुम्हारे जीवन से हर प्रकार के आनन्द को छीन लेना चाहता है'' या ''वह निश्चय ही मेरी समस्याओं की ओर ध्यान नहीं लगाता'' कहलवाकर मसीह के साथ जीने के आपके ''लक्ष्य'' को बाधित करने का प्रयास करेगा।

रोमियों 8:32 में पौलुस कहता है :

''जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया : वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा ?''

दूसरे शब्दों में, आपका स्वर्गीय पिता आपसे इतना असीम प्रेम करता है कि आपकी हार्दिक इच्छाओं को पूरा करने में उसे आनन्द मिलता है। यदि आप मसीह के लिए जीवन जीते हैं और उस पर भरोसा करते हैं तो आपको निम्न अनुभव प्राप्त होगा ...

परम आनन्द
परम शान्ति
गहन प्रेम
गहन आत्म विश्वास
परम आशा
परम संतुष्टि

लगातार जारी युद्ध

शैतानी हमलों के चलते रहने के कारण, जब तक आप जीवित रहेंगे, आपकी अपनी देह भी, आपके साथ बनी रहेगी और उसकी इच्छा-पूर्ति की लालसा भी बनी रहेगी।

कामों को अपने तरीके से करने..... या मसीह के तरह से करने की इच्छाओं के बीच लगातार युद्ध जीवन भर चलता रहेगा। पढ़ें गलतियों 5:16-23

प्र गलतियों 5:16-18 का सन्दर्भ इस युद्ध स्थिति के बारे में क्या कहता है ?

पवित्र आत्मा की सुनकर उसकी अगुवाई में पीछे-पीछे चल पड़ने को चुन लेना ही हमेशा सही चुनाव साबित होगा !

गलतियों 5:16-23 दो विभिन्न जीवनों के अन्तर को दर्शाता है :

आत्म नियन्त्रित जीवन	आत्मा द्वारा नियन्त्रित जीवन
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

पवित्र आत्मा की ''भरपूरी''

बाइबिल बताती है :

''पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे''।

गलतियों 5:16

''भरपूरी'' शब्द का अर्थ होता है दिशा-निर्देशित और नियन्त्रित। बास्केट बॉल का खिलाड़ी स्वेच्छा से अपने आपको अपने 'कोच' (प्रशिक्षक) के अधीन कर देता है। वह ऐसा इसलिए करता है ताकि वह अच्छे से अच्छा खेल सके..... और खेल में विजय प्राप्त करे।

खिलाड़ी कोई रोबोट (मशीनी आदमी) नहीं है; लेकिन वह अपने कोच को स्वेच्छा से सही दिशा निर्देश देने के लिए चुन लेता है, क्योंकि वह अच्छा खेल खेलना..... और जीतना चाहता है।

प्र इफिसियों 5:18 क्या कहता है ?

सोचने का नया ढंग

आपके लिए परमेश्वर की अद्भुत योजना आपको मसीह की छवि में ढालने की है। जीवनपर्यन्त चलने वाली यह प्रक्रिया पवित्र आत्मा का काम है..... जबकि आपने अपने जीवन का नियन्त्रण उसके हाथों में सौंप दिया है (रोमियों 8:29)।

जैसे ही हम स्वयं को उसमें सौंप देते हैं, पवित्र आत्मा हमें धीरे-धीरे मसीह के स्वरूप में स्थिर करने लगता है। हालांकि, वास्तविकता यह है कि हम पूर्ण रूप से तो मसीह के समान कभी भी नहीं हो सकेंगे जब तक कि हम उसके साथ स्वर्ग में नहीं होंगे।

दो तरह के मसीही

अगले पृष्ठ पर चित्रित गोले दो तरह के मसीहियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और सिंहासन यह प्रदर्शित करते हैं कि नियन्त्रण में कौन है।

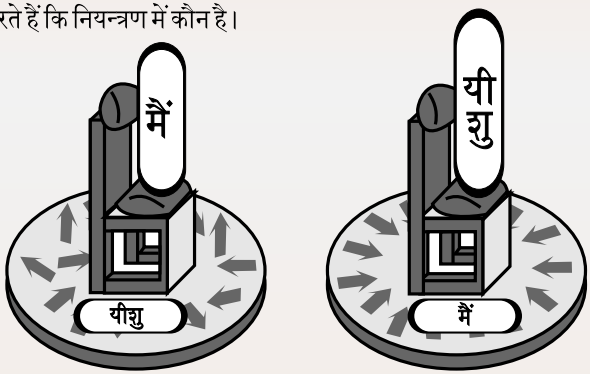

बांयी ओर बना गोला एक ऐसे मसीही को दर्शाता है, जिसने अपना जीवन तो मसीह को दे दिया है, लेकिन अपने जीवन का नियंत्रण अपने आपको सौंप रखा है। उसकी सभी गतिविधियां, रुचियां, इच्छाएं और चुनाव स्वयं-निर्देशित होते हैं, जो कि उसे कुण्ठाग्रस्त जीवन और पराजय (तीरों द्वारा प्रदर्शित) की ओर ले जाते हैं।

गलतियों 5:19-21 उस मसीह का उदाहरण प्रस्तुत करता है जिसने अपने जीवन के केन्द्र-बिन्दु पर 'स्वयं' को रख छोड़ा है।

दांयी ओर का गोला उस मसीही को दर्शाता है जिसने मसीह को अपने जीवन का मुख्य केन्द्र बनाया है।

उसकी सारी गतिविधियां, रुचियां एवं चुनाव मसीह द्वारा निर्देशित होते हैं, जिनका परिणाम परमेश्वर की योजना के साथ समाहित है। यही मसीह के साथ जुड़े रहने का जीवन है जो परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारी बने रहने से उत्पन्न होता है। गलतियों 5:19-23 मसीह द्वारा निर्देशित जीवन और स्वयं के द्वारा निर्देशित जीवन के बहुत बड़े अन्तर को दर्शाता है।

पवित्र आत्मा को अपना जीवन समर्पित कर देने की कुंजी है ''सही सोच-विचार''।

''.....मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ : यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है''(रोमियों 12:1)।

(मूल यूनानी भाषा के अनुसार, एक ही बार में हो जाने वाला कार्य)

यह मसीह का प्रेम ही है जो इस बात में भरोसा करने के लिए हमें विवश कर दे कि हम जीवन भर पवित्र आत्मा में पूरी तरह से भरोसा कर सके। (2 कुरिन्थियों 5:14,15)

टॉड की कहानी

अपने हाई स्कूल के समय में ही मैंने तीन साल इस बात की लालसा लिए हुई गंवा दिए थे कि मैं 'ज़िन्दादिल स्वभाव' वाले लड़कों के एक विशिष्ट क्लब 'मावरिक्स्' में शामिल हो जाऊं। मसीह में आने से पहले मुझे 'अपनी आत्मा को बेचकर' शामिल होने के लिए कहा गया। हालांकि मैं एक मसीही था, फिर भी मैंने यह सोचा कि यह ठीक ही होगा, जबकि वह क्लब शराबियों का अड्डा था।

''मैंने मसीह तक पहुंचने के भरसक प्रयास के बारे में गम्भीरता से सोचना शुरु कर दिया, और जो स्वयं को नाशमान करने वाली बातें थीं उन्हें उठाकर ताक पर धर दिया था। आखिरकार सप्ताह के अन्त तक मैंने निर्णय करने का निश्चय कर लिया''।

''यह उसी सप्ताह के बीच की बात थी जब मुझे 'मावरिक्स्' में शामिल होने का बुलावा आया! मैं तुरन्त जान गया कि व्यक्तिगत लगाव भारी पड़ रहे थे और शैतान मेरे फैसले को पटरी से उतारने की कोशिश कर रहा था। मैंने उसे आनन्दित नहीं होने दिया..... मैंने अपने जीवन का रुख पूरी तरह से परमेश्वर की ओर मोड़ दिया। परमेश्वर ने मुझे वास्तविक स्वतंत्रता दी..... और दिया एक अद्भुत जीवन!''

जीने की एक नयी राह

जैसा कि रोमियों 12:1 कहता है - पवित्र आत्मा को अपना जीवन दे देना एक निर्णय है..... आपके लिए यह एक स्वतंत्र चुनाव है। ऐसा बहुत ही आसानी से भरोसेमन्द परमेश्वर के हाथों में अपना जीवन दे देने से किया जाता है।

जैसे ही आप अपने पापों की क्षमा के लिए विश्वासपूर्वक मसीह के पास आएं तो आपको विश्वासपूर्वक पवित्र आत्मा से अपने जीवन को नियंत्रित करने के लिए कहना चाहिए। जब आप यह सोचते हैं कि उसने आपके लिए क्या किया है और वह आपसे कितना प्रेम करता है..... तो क्या इससे बढ़कर दूसरा भी कोई चुनाव है?

मसीह के आपके प्रति प्रेम के जवाब में आप बस निम्नलिखित प्रार्थना करें :

''प्यारे प्रभु, मैं चाहता हूं कि आप मेरा जीवन स्व-केन्द्रित से मसीह - केन्द्रित में बदल दें। मैं अपने पापमय विचारों और कार्यों को स्वीकार करता हूं और पवित्र आत्मा आपको, ठीक इसी समय अपने जीवन का नियन्त्रण सौंपता हूं''।

यदि आपने ये शब्द निष्कपटता से अपने प्रभु से बोले हैं, तो आप परम जीवन जीने के लिए तैयार रहें!

प्र आपके लिए इस प्रतिज्ञा का क्या अर्थ है ?

_____

_____

_____

अब आप पवित्र आत्मा के लिए ''वर्ग पहेली'' के अन्य टुकड़ों को जोड़ने के लिए तैयार हैं। अगले अध्याय में आप देखेंगे स्वयं परमेश्वर अपनी महान सामर्थ्य द्वारा परमेश्वर के वचन की सामर्थ्य आपको प्रदान करने के लिए कितना विश्वासयोग्य है!

अतः..... यीशु का आपके घर में कैसा स्वागत है ?

क्या आप डरते हैं कि यीशु आपके जीवन का सारा आनन्द ले लेगा ? क्या आप उसे अपने ''घर'' के मुख्य कमरों से बाहर रखते हैं ?

यीशु स्वयं आपके घर के किसी भी कमरे में जाने के लिए ज़ोर नहीं डालेगा - लेकिन वह सहनशीलता के साथ यह साबित करने के लिए आपके जीवन में काम करता रहेगा कि वह आपके जीवन के हरेक भाग को अद्भुत रीति से परिपूर्ण कर सकता है।

जब आपकी भावनाएं प्रबल होकर आपको पाप करने की इच्छा और परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने की ओर ले जाएं, तो अपने को दोषी न मानें। हालांकि उन निर्णयों के कारण आपको दर्द भरी पीड़ा से होकर गुज़रना पड़ सकता है, पर परमेश्वर के पास आपके कोको बीज को चॉकलेट में बदल देने के अद्भुत तरीके हैं।

वह आपको जैसे आप हैं, उसी रूप में ग्रहण करेगा..... और वह आपके जीवन में लड़ियों और तन्तुओं को फिर से बुनना आरम्भ कर देता है..... जब आप उसके पास पाप की स्वीकारोक्ति और पश्चात्ताप की भावना से भरकर आते हैं।

कुछ समय इस बारे में सोचने में बिताएं कि यीशु आपसे कितना प्रेम करता है और उसने क्रूस पर आपके लिए क्या किया।

अगर आपने उसे उसका स्वागत महसूस होने नहीं दिया है, तो अब उसे यह बताने का उचित समय होगा कि आप इसमें बदलाव लाना चाहते हैं!

प्र आप ने उसे क्या बताया ?

3

परम सामर्थ्य
पवित्र आत्मा - भाग दो

विश्वास .....

पवित्र आत्मा में होकर चलने की कुंजी

अध्याय दो में आप ने कई बातें सीखीं जो पवित्र आत्मा आपके लिए करता है :

वह आप में रहता है और आपको मसीह का सा स्वभाव देता है।
वह आपका सबसे अच्छा दोस्त और प्रभु है।
वह आपको मसीह के स्वरूप में ढालता है,
वह आपके लिए मार्ग तैयार करता है।
जब आप उसको समर्पित हो जाते हैं तो वह आपको नियन्त्रित करता है।
उसके लिए जीने को वह आपको आनन्द, शक्ति, तृप्ति, प्रेम, आशा और बल भेंट करता है।

इस अध्याय में आप उस अद्‌भुत सामर्थ्य के विषय में सीखेंगे जो पवित्र आत्मा आपको उस समय देता है जब आप आत्मा में होकर प्रत्येक पल उसके साथ चलते हुए बिताते हैं..... चाहे परिस्थितियां कैसी भी हों !

पौलुस ने गलतियों को दौड़ जीतने का भेद बताया :

''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है : और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल इस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझसे प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया''।

गलतियों 2:20

परमेश्वर और उसके वचन में विश्वास के मार्ग द्वारा ही पौलुस ने अपनी दौड़ को पूरा किया और यही इस ''वर्ग पहेली'' का ''टुकड़ा'' है जिस पर और दूसरे ''टुकड़े'' आधारित हैं!

विश्वास यह कि कैसे मसीह को आपने ग्रहण किया।
विश्वास यह कि कैसे आपने अपने जीवन का रुख पवित्र आत्मा की ओर मोड़ दिया।
विश्वास यह कि प्रतिदिन के कार्यों के आधार पर आप कैसे पवित्र आत्मा में होकर चलते हैं।

प्र विश्वास के विषय में इब्रानियों 11:6 क्या कहता है?

_____

_____

यह विश्वास का ही फल है कि परमेश्वर की अद्भुत सामर्थ्य आपको मिली हुई है।

''जोश से भर तो गए''..... पर सामर्थ्य नहीं

यीशु पिता के पास जाने से पहले अपने शिष्यों को अन्तिम निर्देश दे रहे थे। उसके पुनरुत्थान प्राप्त कर लेने के बाद वे सब पूरी तरह से ''जोश से भर गए थे''..... और उसके पीछे चलने के लिए सब कुछ छोड़ने को तैयार थे।

लेकिन यीशु जानते थे कि वे तैयार नहीं हैं। लेकिन तीन साल तक उसकी शिक्षा प्राप्त कर लेने और यीशु द्वारा उन्हें शिष्यता प्रदान करने के बाद भी ..... उन में वह जीवन जीने की सामर्थ्य नहीं थी जैसा जीवन जीने के लिए उसने उन्हें बुलाया था। अगर उन्होंने मसीह के लिए अपनी स्वयं की सामर्थ्य के अनुसार जीवन जीने का प्रयास किया तो दुखः भरे तरीके से असफल हो जाएंगे!

यीशु जानते थे कि उन्हें उसकी सामर्थ्य की आवश्यकता है।

उसने उन्हें बताया -

''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे''।

प्रेरितों के काम 1:08, जे.बी. फिलिप्स

भावनाएं चंचल होती हैं

बहुत से विश्वासियों ने पवित्र आत्मा की सामर्थ्य को भूलवश भावनात्मक अहसास या सुख की भ्रान्ति मान लिया है। अफसोस, जब भावनाएं और अहसास अलग होते हैं..... तो वे सोचने लग जाते हैं कि उन्होंने पवित्र आत्मा की सामर्थ्य को खो दिया है। उन्हें परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर भरोसा नहीं रह जाता :

''मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा''।

इब्रानियों 13:5

प्र क्या आप किसी ऐसे समय के बारे में विचार कर सकते हैं जब आप चाहते थे कि पवित्रात्मा आपको ''भावनाओं'' से ''भर'' दे ?

_____

_____

प्र भावनाएं ही पर्याप्त क्यों नहीं हैं ?

_____

_____

पवित्र आत्मा जिस सामर्थ्य को आप तक पहुंचाता है, वह भावनाओं या अहसास से कहीं अधिक बढ़कर है..... हालांकि यह उस का एक हिस्सा अवश्य हो सकती हैं। वह आपको अपनी सामर्थ्य प्रदान करता है ताकि आप उस अद्भुत जीवन को जी सकें जिसकी योजना मसीह ने आपके लिए तैयार कर रखी है।

- ☒ **मसीह में बने रहने और दूसरों से प्रेम करने की सामर्थ्य**
- ☒ **दोषारोपण से बच निकलने की सामर्थ्य**
- ☒ **परीक्षाओं से मुक्त होने की सामर्थ्य**
- ☒ **पाप से छुटकारा पा लेने की सामर्थ्य**
- ☒ **फल उत्पन्न करने की सामर्थ्य**
- ☒ **मसीह की आज्ञा पालन करने की सामर्थ्य**

यीशु आपको पालन करने के नियमों की सूची नहीं देते हैं;
बल्कि वह अपने पवित्र आत्मा के द्वारा आपको आज्ञाकारिता का जीवन जीने का अधिकार देते हैं। यह सब सम्बन्धों के बनाने के बारे में है - न कि नियमों के।

अद्भुत जीवन..... आपका चुनाव

आपके जीवन के हरेक पल में, पवित्र आत्मा परम जीवन के बारे में आपका मार्गदर्शन करने की प्रतीक्षा करता है। परन्तु, वह हमेशा आपको स्वतन्त्र रीति से चुनाव करने देता है।

प्रेरित पौलुस (भूतपूर्व नाम शाऊल) आरम्भिक मसीहियों का कट्टर विरोधी रहा था। एक उच्च पद वाला यहूदी अगुवा होने की हैसियत से वह हरेक उस बात से क्रोधित रहता था जिसका पक्ष मसीही लोग लेते थे..... और मसीहियत का नामोनिशान मिटा देना चाहता था और मसीह की आराधना करने को भी, यहां तक कि मसीहियों को मौत के घाट उतारना भी चाहता था।

''चलते-चलते जब वह दमिश्क पहुंचा, चमत्कारी रूप से यीशु ने उसके सामने प्रकट होकर दर्शन दिया। जब पौलुस ने यीशु को देखा और सुना..... उन्हें प्रभु की हैसियत से पहचानते हुए..... उसने यीशु से पूछा ''आप मुझसे क्या कराना चाहते हैं ?''

प्रेरितों के काम 9:6 के अनुसार

पौलुस की मसीह की सेवकाई की इच्छा जैसा स्वभाव ही परमेश्वर आपसे चाहता है।

विश्वास ही व्यवहार का कारण होता है

आप जो भी प्रतिक्रिया करते हैं, जैसा भी व्यवहार करते हैं वह आपकी सोच की प्रेरणास्वरूप ही उत्पन्न होता है।

बहुत से लोग अपने जीवनों को रुपया-पैसा, कामेच्छा (सैक्स), या खिलवाड़ जैसी चीजों के पीछे भागने में गुज़ार देते हैं, यह सोचकर कि इनसे उनका जीवन आनन्द से भर जाएगा। वे सोचते हैं ''वह जो खिलवाड़ भरा जीवन व्यतीत करके मरता है, विजयी होता है !'' परिणामस्वरूप वे अपना जीवन तबाह कर लेते हैं।

कुछ लोग परमेश्वर को अपने जीवन से अलग कर देते हैं, यह सोचकर कि जीवन उबाऊ हो जाएगा। उनका मानना होता है कि परमेश्वर मौज-मस्ती के विरुद्ध है..... और उनके सपनों की परवाह नहीं करता। वे अपने भविष्य को उस के भरोसे पर छोड़ने की इच्छा नहीं करते।

बाइबिल बताती है कि परमेश्वर आपसे इतना प्रेम करता है कि वह आपके भविष्य के लिए श्रेष्ठ योजनाएं तैयार करने की इच्छा रखता है। पढ़ें, भजन संहिता का लेखक इस बारे में क्या कहता है !

''यहोवा को अपने सुख का मूल जान,
और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा''।

भजन संहिता 37:4

यदि आप परमेश्वर के वचन को सत्य जानकर स्वीकार करते हैं तो आप अपनी सारी योजनाएं और सपने परमेश्वर को दे देंगे, क्योंकि आप विश्वास करते हैं कि ''वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा''।

प्र परमेश्वर की विश्वसनीयता के बारे में रोमियों 8:32 क्या कहता है ?

प्र क्या आप परमेश्वर के वचन की सच्चाई को अपने विश्वास की नींव बनाने को तैयार हैं?

शंकाओं पर काबू पाना।

जोनी की कहानी

जोनी इरेक्सन एक आकर्षक, खिलंदड़े स्वभाव की किशोरी थी जिसके जीवन की हरेक बात उसके अनुसार ही हो रही थी - जब तक कि उसने सीधे सिर के बल एक छिछली झील में छलांग लगाकर - अपनी गर्दन न तोड़ ली।

जोनी ने यंग लाइफ में मसीह पर उद्धार पाने के लिए भरोसा किया था, लेकिन उसकी अधिकतर आशाएं और सपने खुद की इच्छापूर्ति के लिए ही थे। अचानक ही जोनी की दुनिया में पतन हो गया। वह कभी भी नहीं चल सकेगी, या अपने हाथों को इस्तेमाल कर सकेगी ! जोनी का विश्वास डगमगाने लगा था। जोनी बताती हैं :

''अपनी चोट के शुरुआती कुछ महीनों में, परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं सच के अलावा कुछ और ही प्रतीत होती थीं..... मुझसे भरोसा करने की आशा कैसे की जा सकती थी जबकि मेरे अन्दर और बाहर हर एक बात ठीक विपरीत ज़ोर मार रही थी ?''

जोनी ने पुरजोर कोशिश जारी रखी जब तक कि यंग लाइफ के एक मित्र जिनका नाम स्टी एस्ट्स था ने उसे परमेश्वर पर भरोसा रखने के लिए उत्साहित न किया। समय बीतने के साथ, परमेश्वर के वचन को सुनने के द्वारा जोनी ने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना शुरु कर दिया।

जोनी ने विश्वास के द्वारा अपनी निराशा..... पर काबू पाया - और आज वह एक अंतर्राष्ट्रीय धर्म प्रचार संस्था (जोनी और मित्र) का संचालन कर रही है, जो मसीह के प्रेम को संसार भर के अपंग लोगों के साथ बांटती है।

''आज जब मैं अतीत की ओर पलटकर देखती हूं। मैं इस बात से सहमत होती हूं कि लकवे (पक्षाघात) की कठिन परीक्षा परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित हुई। परमेश्वर के किसी अलौकिक मज़ाक का क्रूर आघात मुझ पर नहीं हुआ था। मेरे कष्टों के पीछे परमेश्वर की ओर से कई कारण थे, और इनमें से कुछ के ज्ञान ने संसार का सारा भेद मिटा दिया ! (जोनी - ए स्टेप फरदर (जोनी-एक कदम और आगे))''।

अद्भुत विश्वास

बाइबिल बताती है कि परम विश्वास का जीवन जीना सम्भव है। इब्रानियों अध्याय 11 ऐसे स्त्री और पुरुषों का उदाहरण हमें देता है, जिन्होंने बड़े संकटों में और विरोध के बावजूद भी परमेश्वर पर भरोसा किया। ऐसा जीवन परमेश्वर को अति प्रसन्न करता है और नतीजे के रूप में हमारी परिस्थितियों पर हमें विजय प्राप्त करने की परम सामर्थ्य देता है।

प्र इब्रानियों, ग्यारहवां अध्याय उन स्त्री और पुरुषों के बारे में बताता है जिन्हें परम विश्वास था। इब्रानियों अध्याय 11 पढ़ें और अपने विचारों को लिखें :

_____

_____

_____

जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र की दासता से छुड़ाया तो उसने बहुत से आश्चर्यकर्म किये, जिसमें शामिल था लाल समुद्र को सुखा देना ताकि वे फिरौन की सेना से बच निकलें। उन्होंने इस काम में परमेश्वर का बड़ा हाथ देखा, लेकिन जल्दी ही इसको भूल गए और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को मुहैया कराने के उसके वायदे पर सन्देह करने लगे।

परमेश्वर ने उन्हें मूसा के द्वारा बताया कि उसके पास उनके रहने के लिए एक विश्राम स्थल है जो कि प्रतिज्ञा के देश के नाम से जाना जाता था, ''एक देश जहां शहद और दूध की धाराएं बहती थीं'' परन्तु उन्होंने सिर्फ़ शिकायत और परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर सन्देह के अलावा कुछ न किया। (पढ़ें निर्गमन अध्याय 3 से 20 तक)

उन्होंने 12 गुप्तचरों को उस देश का भेद लेने भेजा और मालूम कर लिया कि वह ''दूध और मधु की धाराएं बहाने वाला'' स्वर्ग के समान देश है, लेकिन वहां बड़े डील-डौल वाले पुरुष भी थे। जब वे वापस लौटे और अपनी खोजों की जानकारी दी, तो केवल यहोशू और कालेब ही परमेश्वर पर भरोसा रखने और उन बड़े डील-डौल वाले पुरुषों का सामना करने के इच्छुक थे। दूसरे अन्य 10 भेदिए डर गए और उन्होंने शेष सन्देह करने वाले इस्राएलियों को इस बात के प्रति आश्वस्त कर दिया कि वे बड़े-डील-डौल वाले उन पुरुषों को परास्त करने में असमर्थ हैं। अगले 40 वर्षों तक वे परमेश्वर पर भरोसा न रखते हुए, बेमन से और उसके विश्राम स्थल में प्रवेश न करने की इच्छा रखते हुए उस बियाबान में ही भटकते रहे। (पढ़ें गिनती अध्याय 13 और 14)

प्र आपके जीवन में उन बड़े डील-डौल वाले पुरुषों के समान क्या है ?

प्र परमेश्वर के पास आपके लिए विश्राम स्थल है। पढ़ें इब्रानियों 3:7-4:16, इस सन्दर्भ के अनुसार हम परमेश्वर के विश्राम में कैसे प्रवेश करें :

प्र हम किसके विरोध में चेताए गए हैं ?

यदि आप उसके वचन में दी गयी प्रतिज्ञाओं पर सरलता से भरोसा करेंगे तो आप उस अद्भुत विश्राम को पा लेंगे। यही परम विश्वास है !

क्या आपके जीवन में कोई बात ऐसी है जो परमेश्वर पर भरोसा रखने से आपको अलग किए हुए है ? यदि परमेश्वर पर भरोसा रखने से निम्न बातों के क्षेत्रों में से कोई एक आपको अलग रखे हुए है - परमेश्वर के सम्मुख स्वीकारें, और पश्चात्ताप करें (अपनी विचार धारा को बदलें) अभी - इससे पहले कि बहुत देर हो जाए।

	सहायक		पीड़ा देने वाले
मित्र	☐	.....	☐
मनोरंजन के साधन	☐	.....	☐
आदतें	☐	.....	☐
परमेश्वर के वचन में समय बिताना	☐	.....	☐
विचारधाराएं	☐	.....	☐

आपके जीवन के हरेक क्षेत्र में परमेश्वर पर भरोसा रखा जा सकता है।

प्र ऊपर की सूची के मूल्याकंन में कुछ समय बिताएं, और किसी भी क्षेत्र में जिसमें बदलाव के लिये आपको प्रार्थनामय प्रतिक्रिया की आवश्यकता हो, उसके बारे में लिखें।

अपनी बुद्धि को नया करते रहना

रोमियों 12:1 पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में अपने जीवन को सौंप देने के एक बारगी निर्णय के बारे में बताता है। (यूनानी भाषा का ''अनिश्चित भूतकाल'')

रोमियों 12:2 मूल यूनानी भाषा का प्रयोग करते हुए बताती है, जिसका कि अर्थ बुद्धि को लगातार नया करते रहना है।

''और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो''।

रोमियों 12:2

यह पद बताता है कि आप पश्चात्ताप करने का चुनाव कर सकते हैं ..... और किसी भी क्षण अपने जीवन को पवित्र आत्मा को समर्पित कर सकते हैं।

आत्मा में होकर चलना प्रत्येक क्षण लेने वाला निर्णय है।

परमेश्वर का मार्ग चुनना

हर एक विश्वासी पाप करता है और समय आने पर पवित्र आत्मा के साथ संगति को तोड़ देता है (1 यूहन्ना 1:8)। टूटी हुई संगति का अर्थ यह नहीं है कि आपके पाप क्षमा नहीं किये जाते हैं। यीशु ने आपके सारे पापों का दाग एक ही बार, सब बातों के लिए - अतीत - वर्तमान - और भविष्य के लिए भी..... क्रूस पर चुका दिया है!

टूटी हुई संगति का अर्थ है कि आप मसीह में नहीं रह रहे हैं, और इसीलिए जीवन जीने में परमेश्वर की परम सामर्थ्य का अनुभव नहीं कर पा रहे हैं।

टूटी हुई संगति

जीवन में ''परमेश्वर के मार्ग को चुनने'' का नतीजा होता है - उद्देश्य, सामर्थ्य, शान्ति और आशा। परमेश्वर हर समय आपका मार्ग दर्शन करना चाहता है।

परन्तु आपका पापमय अंश हमेशा आपके अपने बताये हुए मार्ग पर चलना चाहता है। ..... एक ''आत्मकेन्द्रित मार्ग''। हो सकता है कि आत्मकेन्द्रित जीवन आपको ऊँचाई पर पहुंचाकर कुछ समय का आनन्द प्रदान करे परन्तु प्रायः उसका अन्त भय, खालीपन, अकेलापन और अन्ततः निराशा में ही होता है।

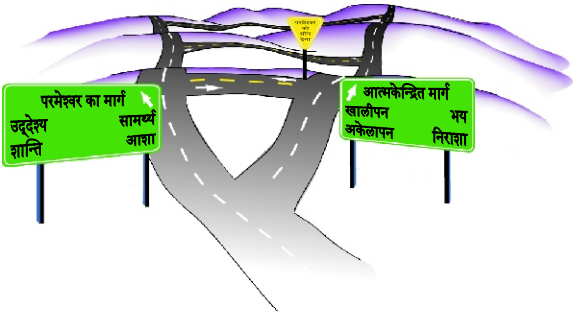

ऊपर दिया गया उदाहरण स्वरूप चित्र आपको दर्शाता है कि अपने दिनों के किसी भी क्षण में आप ''परमेश्वर के मार्ग'' से पिछड़ सकते हैं और पुनः उसके साथ संगति को प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए निम्न चरणों के अनुसार चलें :

1. **परमेश्वर कौ सौंप देने का चुनाव**
(रोमियों 12:2)

2. **अपने पापों का पश्चात्ताप करना**
(1 यूहन्ना 1:9)

3. **परमेश्वर पर भरोसा रखना कि वह नियन्त्रित रखता है**
(1 यूहन्ना 5:14-15)

आत्मिक श्वास क्रिया

इस बात को भली भांति समझने के लिए हरेक क्षण - क्षण के दरम्यान आत्मा में होकर कैसे चलें, बिल ब्राइट इसकी तुलना साँस लेने (श्वास क्रिया) से करते हैं। जब आप साँस लेने की क्रिया करते हैं तो आप अन्दर की अशुद्धियां बाहर निकालते हैं। और शुद्ध हवा एवं ऑक्सीजन को अन्दर ग्रहण करते हैं।

आत्मिक श्वास क्रिया के दौरान आप अपने अन्दर से पाप को पश्चात्ताप के द्वारा बाहर निकालते हैं और विश्वास के द्वारा - पवित्र आत्मा के नियन्त्रण को अपने अन्दर भर लेते हैं। (पढ़ें - बिल ब्राइट की पुस्तक ''स्पिरिट फिल्ड लाइफ'' (आत्मा से परिपूर्ण जीवन)।

बाहर साँस निकालना :

- अपने पापों का पश्चात्ताप करें (1यूहन्ना 1:9)

अन्दर साँस भरना :

- पवित्र आत्मा से आपका नियंत्रण लेने को कहें (गलतियों 5:16)

याद रखें - मसीह ने आपको पाप की दासता के बन्धन से मुक्त कराया है।

एक बार जब पवित्र आत्मा आपके जीवन का नियन्त्रण अपने हाथों में ले लेता है, तो वह आपको परमेश्वर के लिए जीवन जीने की परम सामर्थ्य देता है।

परखे जाने से उबरने की सामर्थ्य

''..... जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे''।

याकूब 1:2-4

सच्चाई यह है कि परखे जाने के दौर से हम सबको गुज़रना होगा। परमेश्वर पर भरोसा और उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखना ही उनसे उबरने का एकमात्र तरीका है।

लार्स की कहानी

एक अज्ञात खिलाड़ी की भांति, लार्स हैन्सन ने 13 वर्ष की किशोरावस्था में ही ऑन्टेरिओ बैन्टम गोल्फ चैम्पियनशिप जीतकर कनाडा गोल्फ समुदाय के जगत को हैरत में डाल दिया था। उसकी तेजस्वी मुस्कान, आकर्षक नैन-नक्श और विजयी व्यक्तित्व से ऐसा प्रतीत होता था कि लार्स को वह सब कुछ मिल गया है जो उसका जीवन आनन्द से भर दे।
लेकिन एक भीतरी खालीपन और उद्देश्यहीनता ने उसे प्रभु यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकारने के लिए प्रेरित किया।

शीघ्र ही लार्स ने बाइबिल पढ़ना और अपने मित्रों के साथ यीशु के जीवन के बारे में बाँटना शुरु कर दिया। कॉलेज-स्तर पर गोल्फ खेलने तथा गणित से स्नातक उपाधि प्राप्त कर लेने के बाद लार्स ने एक बड़े निगम के साथ काम करना शुरु कर दिया। 28 वर्ष की अवस्था में लार्स को कमज़ोरी महसूस होना शुरु हो गई, जांच-परीक्षण के दौरान पता लगा उसका गुर्दा सही रूप से काम न करने की गम्भीर बीमारी हो गयी है। अन्ततः उसके गुर्दे खराब हो गये, आंखों की रोशनी चली गयी और अन्त में 35 वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गयी।

सात वर्षों के भीतर ही लार्स की सुडौल खिलाड़ी वाली काया, आंखों की रोशनी और स्फूर्ति बद से बदतर हो गई, और मसीह में उसका विश्वास वास्तव में और गहरा होता चला गया। वह रेडियो पर प्रसारित होने वाले मसीही कार्यक्रमों को सुनता रहा और कभी भी ''क्यों?'' शब्द उसके मुंह से नहीं निकला। यहां तक कि अपनी अत्याधिक पीड़ा के क्षणों में भी, उसने विश्वास किया कि परमेश्वर ने उससे प्रेम किया है और उसने उसके (लार्स) के लिए परखे जाने के बदले एक अज्ञात उद्देश्य रख छोड़ा है। अपने जीवन की अन्तिम रात्रि को, लार्स ने कमज़ोरी की हालत में अपने स्वर्गीय पिता से प्रार्थना की, इस बात का भरोसा करते हुए कि आने वाले भविष्य में वह उसके साथ होगा।

''और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं''।

रोमियों 8:28

प्र इस पद में परमेश्वर आपको क्या बता रहा है कि किस बात के लिए आप उसमें भरोसा रख सकते हैं ?

इस बात की परख कि आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन जी रहे हैं या नहीं का अर्थ यह नहीं है कि आप परिस्थितियों से, संकट से उबर चुके हैं, बल्कि यह है कि आप अपने प्रभु के विश्वास में होकर और उसकी आज्ञाओं का पालन करके अपना जीवन जी रहे हैं।

परीक्षाओं पर सामर्थ्य प्राप्त करना

हम सभी लोग प्रतिदिन बहुत सी परीक्षाओं का सामना करते हैं। परीक्षा में पड़ जाना पाप नहीं है..... यह एक सामान्य सी बात है।

जब आप परीक्षा में पड़ते हैं तो आपके सामने एक चुनाव होता है कि या तो आत्म समर्पण कर दें या परमेश्वर पर भरोसा रखें। परीक्षा के दौर में आत्म समर्पण कर देना पाप है, और यह परमेश्वर के साथ संगति को तोड़ देता है।

निम्न पद को ध्यान से पढ़ें, और व्यवहार में लाएं कि यह वर्तमान में आपके सामने आ रही किसी भी तरह की परीक्षा के बारे में क्या बताता है।

''..... तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है : और परमेश्वर सच्चा है : वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको''।

(1 कुरिन्थियों 10:13)

इस पद में, परमेश्वर आपको बताता है कि परीक्षा से कैसे बाहर निकला जाता है :

परमेश्वर पर भरोसा रखें..... कि आपकी परीक्षा सामान्य है।
परमेश्वर पर भरोसा रखें..... इसके सामने ठहरे रहकर सहने की क्षमता प्रदान करता है।
परमेश्वर पर भरोसा रखें..... आपको ''निकासी'' देने की।

प्र परीक्षाओं से बाहर निकलने की सहायता हेतु क्या आप परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं ?

कभी न कहें, ''परीक्षा बहुत कठिन है'', और उसके आगे समर्पण कर दें। यदि आप मसीह में होकर रह रहे हैं, तो पवित्र आत्मा ने आपको परीक्षा के सामने ठहरकर उसको सहने की सामर्थ्य देने की प्रतिज्ञा की है।

लेकिन..... आपको परमेश्वर द्वारा निकासी के मार्ग को स्वेच्छा से ग्रहण करना चाहिए, और जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस को बताया, ''जवानी की अभिलाषाओं से भाग''।

2 तीमुथियुस 2:22

डैरेल की कहानी

''मैं टोरी जिसके साथ मेरा प्रेम दो वर्षों से चल रहा था के साथ शारीरिक सम्बन्धों में लिप्त था। जब मैं मालिबू (यंग लाइफ कैम्प), से वापस आया, तो मैं अपने उद्धारकर्त्ता को प्रसन्न करना चाहता था, लेकिन- मैंने अपने व्यवहार को तर्कसंगत ठहराने की कोशिश यह सोचते हुए की कि परमेश्वर ने उसे अनुमति दे दी होगी। मैंने सोचा कि परमेश्वर मेरी 'आवश्यकताओं' को समझेगा''।

लेकिन, चूंकि मैं मसीह को प्रसन्न करना चाहता था, मैंने यह देखने के लिए बाइबिल पढ़ी कि इसमें शारीरिक पवित्रता के विषय में क्या लिखा है। मैंने मसीह के प्रति आज्ञाकारिता के महत्व को महसूस किया, और यह कि विवाह से पूर्व शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना ग़लत था। यद्यपि मैं जानता था, कि टोरी के साथ सम्बन्धों को समाप्त कर लेने की शक्ति मुझ में नहीं थी।

अतः विश्वास के साथ मैंने पवित्र आत्मा से मुझे उसकी आज्ञा मानने की सामर्थ्य देने को कहा।

उससे यौन सम्बन्ध बनाये रखने की परीक्षा इतनी ज़बरदस्त थी कि मैंने महसूस किया कि टोरी और मुझे एक दूसरे को देखना छोड़ने की आवश्यकता है।

जब मैंने उसकी आज्ञा मानने को और टोरी के साथ यौन-सम्बन्धों को विच्छेद करने को चुना, तो पवित्र आत्मा से मुझे एक असीम आनन्द और शान्ति मिली। उस निर्णय के समय से अब तक, जीवन सचमुच अद्भुत होता जा रहा है।

डैरेल ने परमेश्वर को गम्भीरता से लिया और परीक्षा से ''भाग खड़ा हुआ'' जो उसे अपने जाल में फंसा सकती थी और परमेश्वर के साथ उसके चलन में बाधा पहुंचा सकती थी। विश्वास से डैरेल ने परमेश्वर की आज्ञा मानने का चुनाव किया..... और एक बड़ी विजय प्राप्त की! (यूहन्ना 14:21)

प्र अगली बार परीक्षा में पड़ने पर आप क्या करने जा रहे होंगे?

पाप से बचने की सामर्थ्य

पाप लतों में बदल सकता है, परन्तु पवित्र आत्मा अपनी परम सामर्थ्य से इस बंधन को तोड़ सकता है :

मैट की कहानी

''हालांकि मैं अपनी कलीसिया में आराधना का अगुवा था, फिर भी मैं दोहरा जीवन जी रहा था। मुझे ग्यारह वर्ष की आयु में ही पोरनोग्राफी की लत पड़ गई थी। जैसे-जैसे मेरी लत बढ़ती गई मेरी तीव्र इच्छाएं और अधिक घटिया और कुरूप होती चली गईं। शीघ्र ही मैं इन्टरनेट पर अपनी पूरी रात गुज़ारने लगा और यहां तक कि बलात्कार के बारे में कल्पनाएं भी गढ़ने लगा। मैं स्वयं पर नियन्त्रण खो चुका था।

जब परमेश्वर के एक सेवक ने मुझे मेरी लत को पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा तोड़ने के विषय में बताया, तो मैंने परमेश्वर के वचन पर मनन करना शुरु कर दिया और उसकी प्रतिज्ञाओं को याद किया। तब मैंने परमेश्वर की अद्भुत सामर्थ को अपनी लतों को काबू करने का ज़रिया बनाने को खोज निकाला।

मुझे काबू पाने का मार्ग मिल गया जब मैंने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना शुरु कर दिया। जब भी मैं परीक्षा में पड़ता था, तो मैं परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा के विषय में सोचने लगता जो उस परीक्षा विशेष पर लागू होती थी। तब से मैं उसके वचन पर ही ध्यान केन्द्रित करता हूं, और पवित्र आत्मा से उबरने की सामर्थ्य मांगने की प्रार्थना करता हूं''।

''पाप के बन्धन पर मुझे विजय प्राप्त करने के लिए मेरे लिए दरअसल चार कुंजियां हैं :''

पहली, मुझे परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को स्मरण रखने और उन पर मनन करने के लिए समय देने की आवश्यकता है। मैंने पवित्र शास्त्र के द्वारा परमेश्वर की बहुत सी प्रतिज्ञाओं के खजाने को खोज निकाला जो कि विजयी जीवन जीने के लिए उत्साहवर्द्धक हैं।

दूसरी, जब कभी मेरे विचार ग़लत होते हैं तो अपने पाप का प्रायश्चित कर लेता हूं। 1 यूहन्ना 1:9 के अनुसार मुझे उसके वचन पर भरोसा है कि मुझे क्षमा किया गया है। (बाहर निकालना.. अध्याय 3 देखें।)

तीसरी, मैं अपने विचारों और कामों को पवित्र आत्मा को सौंप देता हूं, उसे यह बताकर कि मैं उसे प्रसन्न रखना चाहता हूं। (अन्दर ग्रहण करना... अध्याय 3 देखें)

अन्तिम रूप से, मैं अपना समय अपने विश्वसनीय सलाहकारों और अन्य मसीहियों के साथ बिताता हूं जो मुझे ज़िम्मेदार मानते हैं और मुझे मसीह की संगति में चलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

''जब से मैंने परमेश्वर के वचन को अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू किया है, मैं पाप और लतों की दासता से स्वतन्त्र हो गया हूं। परमेश्वर ने मुझे बहुत ही अच्छी मसीही पत्नी और बहुत ही अच्छे परिवार से आशीषित किया है। मैं और मेरी पत्नी अब दूसरों को शिक्षा देते हैं कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को स्मरण करके कैसे पाप और लतों से छुटकारा पाने की सहायता ली जा सकती है। मैं स्वयं को अत्याधिक स्वतन्त्र और आनन्दित महसूस करता हूं कि अब मैंने अपने जीवन का रुख मोड़ दिया है और पूरी तरह से अपने जीवन के संचालन को पवित्र आत्मा के हाथों में सौंप दिया है''।

''शैतान द्वारा आपकी तरफ साधे गए जलते हुए तीरों को बुझाने के लिए आपको हरेक युद्ध में विश्वासरूपी ढाल की आवश्यकता पड़ेगी''।

इफिसियों 6:16

यदि आप परीक्षा, पाप या लत को ही अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा या जीवन शैली समझकर उस से जूझ रहे हैं या लिप्त हैं, तो पवित्र आत्मा की सामर्थ्य आपको इस से बाहर निकालकर सम्पूर्ण विजय देने में समर्थ है। उस पर भरोसा रखने का चुनाव करें।

फलवन्त होने की सामर्थ्य

जब आप पवित्र आत्मा पर भरोसा रखेंगे तो वह आपको फलवन्त होने की सामर्थ्य देगा, अपने आपको मसीह को सौंप दें। मसीह को सौंपने का तात्पर्य है कि आत्मा में होकर चलना। यूहन्ना की पुस्तक में यीशु ने अपने शिष्यों से कहा :

''मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो, जो मुझ में बना रहता, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते''।

यूहन्ना 15:5

आत्मा के फल

यीशु ने आपके जीवन की तुलना उन डालियों से की है जो पूरी तौर से दाखलता पर निर्भर हैं। दाखलता का उद्देश्य बड़े रसीले अंगूरों को उत्पन्न करना है। जितना अधिक फल..... उतना ज़्यादा किसान आनन्दित।

पवित्र आत्मा आपके जीवन में आत्मा के फल पैदा करना चाहता है, जिनकी पहचान निम्न

प्रेम	**धीरज**	**विश्वास**
आनन्द	**कृपा**	**नम्रता**
मेल	**भलाई**	**संयम**

आत्मा के फल का नतीजा एक ऐसा हृदय है जिसका प्रयोग परमेश्वर मसीह के लिए दूसरों तक पहुंचने के लिए करता है। पढ़ें यूहन्ना अध्याय 15

आपको प्रतिदिन मिलने वाली सामर्थ्य

जब आप सुबह उठते हैं तो क्या आप अपने रोज़मर्रा के संघर्षों का सामना करने के लिए सहायता हेतु परमेश्वर से उसकी सामर्थ्य देने को कहते हैं :

प्र **नीचे दिए हुए क्षेत्रों में आप किस पर निर्भर रहते हैं ?**

दैनिक मुद्दे :	मेरी सामर्थ्य :	परमेश्वर की सामर्थ्य
सम्बन्ध	☐	☐
स्वास्थ्य / भय	☐	☐
परखा जाना / परीक्षाएं	☐	☐
भावनाएं	☐	☐
विद्यालय / कार्य	☐	☐
लक्ष्य / स्वप्न	☐	☐

अपने जीवन के विस्तृत क्षेत्रों में आप पवित्र आत्मा से उसकी सामर्थ्य देने के लिए कह सकते हैं।

परमेश्वर ने आपको एक बड़ी प्रतिज्ञा के रूप में यह दिया है कि आप अपने प्रत्येक दिन को अपने अनुसार मना सकते हैं।

''क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं..... पर सामर्थ्य, और प्रेम और संयम की आत्मा दी है''।

2 तीमुथियुस 1:7

प्र इस पद में, परमेश्वर किस बात के विषय में आपको बताता है जो उसकी ओर से नहीं है, और वह आपको क्या देने की प्रतिज्ञा करता है ?

_____

_____

तो..... क्या आप अद्भुत तरीके से जीने को तैयार हैं ?

परमेश्वर पर भरोसा रखें..... और उसकी परम सामर्थ्य मसीह के साथ आपकी यात्रा में सभी अलग टुकड़ों को जोड़ देगी !

''तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना, उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा''।

नीतिवचन 3:5 व 6

प्र आप अभी परमेश्वर पर किस लिए भरोसा रखते हैं ?

विश्वास एक मांसपेशी की तरह होता है। इसे कसरत देते रहना चाहिए !

जितना ज़्यादा आप परमेश्वर के वचन को जानेंगे, उतना ही अच्छी रीति से आप अपने विश्वास को कसरत देने को तैयार होते जाएंगे।

प्र विश्वास कहां से आता है, इस बारे में रोमियों 10:17 क्या बताता है ?

''वर्ग पहेली'' का अगला महत्वपूर्ण टुकड़ा परमेश्वर का वचन, बाइबिल है। मसीह में आपकी उन्नति सीधे परमेश्वर के वचन में वर्णित अद्भुत प्रतिज्ञाओं की आपकी जानकारी और उन पर अमल करने और आज्ञाओं का पालन करने से सम्बन्ध रखती है !

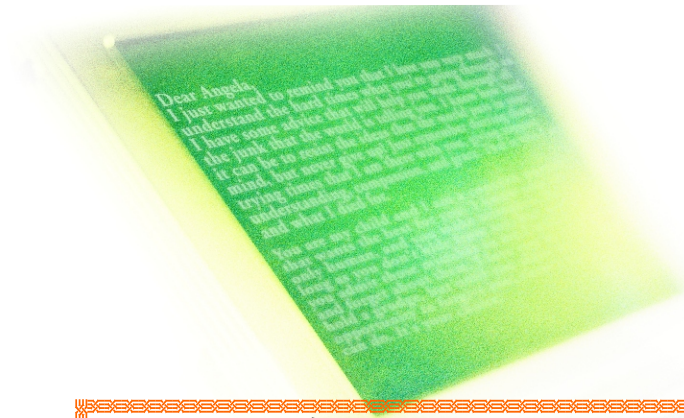

4

भविष्य के लिए अद्भुत प्रावधान

परमेश्वर का प्रेम पत्र..... आपके लिए

यदि आपको यीशु की ओर से ऐसा कोई ख़ास पत्र या ईमेल मिला है..... जो आपको यह बताता हो कि वह आपसे कितना प्रेम करता है..... और जो आपको आपके रोज़मर्रा के मुद्दों के लिए आपको आवश्यक मार्गदर्शन और निर्देशन देता है.....

तो क्या आप उसे पढ़ना चाहेंगे ? क्या आप उसे रखना चाहेंगे, उसे सराहेंगे, इसे स्मरण रखेंगे और उसके बारे में लगातार विचार करते रहेंगे ?

यह निश्चित रूप से बाइबिल के समान है..... यह आपके लिए परमेश्वर का एक प्रेम-पत्र है ! परमेश्वर का वचन आपकी मसीही उन्नति के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि नये जन्मे शिशु के लिए दूध। यह इस ''वर्ग पहेली'' का एक ख़ास ''टुकड़ा'' है।

इससे पहले कि आप शुरुआत करें

बाइबिल उठाकर इस अध्ययन को उचित सन्दर्भों एवं सहायक तत्वों के साथ शुरु करें। अच्छी रीति से समझने के लिए आप आधुनिक अनुवाद इस्तेमाल कर सकते हैं।

वचन के प्रमुख पदों को जो मसीह के साथ आरम्भ होते हैं पढ़ना शुरु करें। यह वे प्रतिज्ञाएं हैं जिन्हें आप रोज़मर्रा के जीवन में पूरी होना चाहते हैं।

परमेश्वर का वचन

इसे पढ़ें। इसे स्मरण रखें। इस पर विश्वास करें। इसे व्यवहार में लाएं।

आपके मार्ग का मानचित्र

यदि आप गाड़ी चलाकर दूर स्थित एक छोटे से कस्बे, जहां आप पहले कभी नहीं गए, जाने की कोशिश कर रहे हों..... तो क्या आप भावुकता और रुझान का सहारा लेकर गाड़ी चलाएंगे..... या उस मार्ग के मानचित्र को देखना चाहेंगे ?

बाइबिल परमेश्वर की ओर आपके जीवनों के लिए ''मार्ग का मानचित्र'' है

''जीवन का मार्ग या रास्ता वास्तव में चकरा देने वाला रास्ता भी हो सकता है : कभी सरल-सपाट तो कभी गड्ढों भरा..... कभी किसी दिन अच्छी तरह चिन्हित जल्दी पहुंचाने वाला मार्ग, परन्तु अगले ही दिन चक्करदार भूल-भुलैया जैसा। लेकिन आपके स्वर्गीय पिता ने आपके मार्ग के लिए एक मानचित्र उपलब्ध करा रखा है - बाइबिल - आपको सही दिशा में ले जाने के लिए''।

क्लोज़र वॉक न्यू टेस्टामेन्ट

जबकि मार्ग का मानचित्र आपको यह नहीं बताता कि मोड़ के चारों ओर क्या-क्या है या सड़क कितनी उबड़-खाबड़ है..... यह (बाइबिल) आपके रोज़मर्रा के रहन-सहन में आपका मार्ग दर्शन कर के आपको ग़लत दिशा में जाने से रोकती है।

बाइबिल मार्ग की ओर एक-एक कदम बढ़ाने के लिए परमेश्वर की अद्भुत प्रतिज्ञाओं से भी आपको मिलवाती है। इस पुस्तिका में आप यह सीखेंगे कि उन्नति करने और मसीह में और अधिक विकसित होने की सहायता प्राप्त करने के लिए कैसे आप अपने मार्ग मानचित्र को इस्तेमाल कर सकते हैं।

आदतों को बदलना

आप हर दिन अपनी आदतों के अनुसार अपने काम करते हैं। आप उठते हैं, नहाते-धोते हैं, तैयार होते हैं, नाश्ता करते हैं, स्कूल जाते हैं, काम पर जाते हैं इत्यादि।

परमेश्वर के वचन को अपने जीवन का एक हिस्सा बनाने के लिए - आपको इसे प्रतिदिन की आदत बनाने की आवश्यकता है। कोई समय चुन लें (सुबहें साधारणतया उचित रहती हैं), तब एक एकान्त स्थान चुन लें..... और बाइबिल पढ़ने और यह सोचने में समय गुज़ारें कि आप इसे अपने जीवन में कैसे अपनाएं। एक बार जब आप ने इसे तीस दिन तक कर लिया तो आपने एक आदत डाल ली है जो आपका जीवन बदल देगी।

परमेश्वर का दृष्टिकोण

परमेश्वर का वचन आपके जीवन के सारे महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर परमेश्वर के द्वारा देता है :

परमेश्वर का स्वभाव
आपका उद्देश्य
परमेश्वर में कैसे उन्नति करें
नैतिक निर्णय
सम्बन्ध/कामेच्छा की भावनाएं/
सुख-सुविधाएं/परीक्षाएं/मृत्यु

''क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित.....
मन भावनाओं और विचारों को जांचता है। यह हमें दर्शाता है कि दरअसल हम कैसे हैं''।

इब्रानियों 4:12

आपका मन..... एक ''नांद''

हर दिन के हरेक क्षण में, आपका मन जानकारियों से लबालब भरा होता है..... इसमें अधिकतर सांसारिक दृष्टिकोण भरे हुए हैं।

आपका जीवन, और आपके निर्णय जो आप लेते हैं वे अधिकतर आपकी नांद में क्या पहुंचता है इससे बहुत प्रभावित होते हैं।

परमेश्वर के दृष्टिकोण को आपके जीवन में स्थान बना लेने के लिए, आपको परमेश्वर के वचन की एक अच्छी ''खुराक'' लेनी चाहिए..... प्रतिदिन **बस** केवल कुछ मिनटों के लिए नहीं।

अध्ययनों ने दिखा दिया है कि औसत किशोर वर्ग के लोग दो और तीन घंटों का समय फालतू नष्ट कर देते हैं। चाहे वह टी.वी. हो, कम्प्यूटर हो या अन्य कोई मनोरंजन का साधन, आपके पास अपनी प्रिय बातों में गुज़ारने के लिए प्रतिदिन काफी समय रहता है।

लेखक मैथ्यू हेनरी ने कहा है -
"अगर आप परमेश्वर की निकटता में आना चाहते हैं,
तो आपको उसके वचन का अध्ययन अवश्य करना है।"

प्र आप पर कुलुस्सियों 3:16 किस तरह व्यक्तिगत रूप से लागू होता है ?

आहार पाना

परमेश्वर के वचन से आहार पाने की आपके पास पांच मूल विधियां हैं :

1. **जो शिक्षा दी गयी है, उसे सुनें।**
2. **उसे पढ़ें।**
3. **उसका अध्ययन करें।**
4. **मुख्य पदों को स्मरण करें।**
5. **उसमें वर्णित प्रतिज्ञाओं पर मनन करें।**

यही सब विधियां परमेश्वर के वचन को अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। आइये, उनमें से प्रत्येक एक दृष्टि करें।

1 परमेश्वर का वचन कैसे सुनें

परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं को सुनने के लिए कई विधियां हैं :

- कलीसिया में
- बाइबिल के शिक्षकों द्वारा / विद्यालयों में
- मसीही सेमिनार्स (गोष्ठियों में)
- इन्टरनेट पर बाइबिल के वेब पृष्ठों द्वारा
- बाइबिल अध्ययन द्वारा
- बाइबिल टेपों / सी.डी. / डी.वी.डी द्वारा
- मसीही रेडियो प्रसारण द्वारा
- मसीही पुस्तकों द्वारा

प्र परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं को आप कैसे सुन रहे हैं, और आप इस सुनने को और कैसे बढ़ा सकते हैं ?

प्र परमेश्वर के वचन को सुनने के बाद उसे इस प्रकार कार्य करना चाहिए कि वह आपके हृदय में इसे पढ़े और सुने जाने की इच्छा प्रबल करे। प्रेरितों के काम 17:11 क्या कहता है?

जब कभी आप परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं को सुनते हैं, यह सीखने का प्रयास करें कि पवित्र आत्मा व्यक्तिगत रूप से आपको क्या सिखाने का प्रयास कर रहा है, अच्छी अध्ययन सामग्रियों का प्रयोग करें, और अपने विचारों को लिख लें।

2 परमेश्वर का वचन कैसे पढ़ें

जब बाइबिल पढ़ रहे हों, तो अच्छा होता है कि इसे धीरे-धीरे विचारपूर्वक पढ़ें। एक अच्छा वाला कलम या मार्किंग (निशान लगाने वाली) पेंसिल अपने विचार लिखने के लिए पास में रखें और मुख्य पदों को रेखांकित करते जाएं।

इसमें दिलचस्पी लें। परमेश्वर ने आपके लिए क्या प्रतिज्ञाएं रख छोड़ी हैं, इसकी ''खोज'' करें। तब सन्दर्भों को लिखें ताकि बाद में आप उन्हें ढूंढ सकें।

अगर बाइबिल पढ़ने का आपका यह पहला रोमांच है, तो यह अच्छा रहेगा कि आप नये नियम से शुरुआत करें, चारों सुसमाचारों में से कम से कम एक तो पढ़ डालें। बहुत से शिक्षक यूहन्ना रचित सुसमाचार से पढ़ने की शुरुआत करने की सिफारिश करते हैं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक आरम्भिक मसीहियों के कार्यों के विषय में बताती है। प्रेरितों के काम सभी मसीहियों के लिए अनिवार्य रूप से पढ़ना आवश्यक है।

प्रेरितों के काम के बाद, पहली मसीही कलीसियाओं के नाम पत्रियां हैं, जो रोज़मर्रा के जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन एवं निर्देश देती हैं। और अन्त में, प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में, आप देखेंगे कि कैसे मसीह इस संसार की सभी वस्तुओं को नाश करने वाला है और ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' होकर अधिपति बनकर राज करने वाला है। यह एकदम अद्भुत बात है!

''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।''

2 तीमुथियुस 3:16,17

प्र बाइबिल की कौन सी पुस्तक आप पढ़ रहे हैं?

---

3 परमेश्वर के वचन का अध्ययन कैसे करें

बहुत सी विधियां हैं जिनके द्वारा आप बाइबिल का अध्ययन कर सकते हैं :
किसी एक विशेष पुस्तक का अध्ययन करें। (उदाहरणार्थ - प्रेरितों के काम)
किसी एक अनुच्छेद या अध्याय को पढ़ें। (उदाहरणार्थ - 2 कुरिन्थियों 5)
बाइबिल के किसी एक सन्दर्भ का अध्ययन करें। (उदाहरणार्थ - प्रेम)
किसी एक पद का अध्ययन करें। (उदाहरणार्थ - 2 कुरिन्थियों 5:17)
बाइबिल के किसी एक सिद्धान्त का अध्ययन करें। (उदाहरणार्थ - छुटकारा)

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने का कारण परमेश्वर की पहचान की अन्तर्दृष्टि प्राप्त करना है कि परमेश्वर कौन है, और वह आपके जीवन में क्या करना चाहता है।

जब बाइबिल का अध्ययन कर रहे हों, तो इन उपकरणों का प्रयोग करें जैसे कनकॉर्डेन्स (एक वर्ण से आरम्भ होने वाले सन्दर्भों या प्रसंगों की व्यवस्था वाली बाइबिल), द एम्प्लीफाइड बाइबिल (विस्तृत जानकारी वाली बाइबिल), ए बाइबिल हैण्डबुक (बाइबिल की छोटी पुस्तिका) या ए गुड स्टडी बाइबिल (उत्तम अध्ययन वाली बाइबिल)। मसीही पुस्तकों जैसे सीक्रेटस् ऑफ द वाइन (दाखलता के रहस्य) का भी प्रयोग करें, ताकि 'अनन्त' जैसी सोचों को समझने में सहायता मिल सके।

उदाहरण : ''निराशा'' का अध्ययन
(बर्ट हार्नेड की कलम से)

''क्या आप 'निराश', 'हताश' हो जाते हैं ?''

मैंने इसका एक त्वरित उपचार ढूंढ लिया है ! हां! इसका वर्णन भजन संहिता 118:6-8 में है। लिखा है,

'यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ? यहोवा मेरी ओर सहायकों में है। यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूंगा।'

वह बिन बादलों की एक खूबसूरत सुबह थी जब मैंने इन पदों पर ध्यान दिया और इन पर विचार करने में समय बिताया। एक-एक शब्द एक ही समय मैं जितना गहराई से सोच सकता था, उसके लिए उतना ही समय दिया और आगे अध्ययन में बढ़ते हुए मैं अध्ययन सामग्री तैयार करता रहा। इस तरह से मैंने शुरुआत की :

प्रभु :	सामर्थी, सर्वशक्तिमान, सृष्टिकर्त्ता, अधिपति, प्रेमी, महिमामय परमेश्वर/यही है वह जो मेरे लिए है !
मेरी :	मतलब व्यक्तिगत रूप से, सामान्य रूप से नहीं, परन्तु विशिष्ट रूप से, नाम लेकर। यह अद्भुत है और ''मेरी'' शब्द उत्साहपूर्वक रूप से रोमांचकारी है, इतनी घनिष्ठता है..... स्वयं परमेश्वर के साथ।
ओर :	का अर्थ है वह मुझे जानता है, अपने मन में मेरी सबसे अच्छी रुचियों को ध्यान में रखता है, मेरे विरोध में नहीं है, वह मेरी ओर है, और जानता है कि मेरे लिए सबसे उत्तम क्या है।
है :	का अर्थ है - ठीक अभी..... वर्तमान में, एक सम्पूर्ण निश्चितता !

''अब आपकी बारी है; एक शान्त जगह ढूंढ़ें और स्वयं के लिए अपने मन में अपने तरीके से इन पदों पर विचार करें''।

आपको बाइबिल के दूसरे अन्य महत्वपूर्ण अध्ययन और बाइबिल के विषय शीर्षक बर्ट हार्नेंड की वेबसाइट डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू . बर्टसगुडस्टफ. कॉम पर मिल जाएंगे।

आपका व्यक्तिगत अध्ययन :

2 कुरिन्थियों अध्याय 5 पढ़ें, बाइबिल के कम से कम दो अनुवादों में से पढ़ें, और लिखें कि 2 कुरिन्थियों 5:14-17 व्यक्तिगत रूप से आपके लिए क्या अर्थ रखता है :

4 परमेश्वर के वचन को कैसे मुखाग्र या कण्ठस्थ करें ?

विषयाक्रम द्वारा स्मरण करने की विधि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को स्मरण रखने की प्रमाणित विधि है। आप 'बिगनिंग विथ क्राइस्ट' (मसीह के साथ शुरुआत करें) जो कि पांच प्रमुख पदों का एक पैकेट है के साथ शुरुआत कर सकते हैं (द नेवीगेटर्स)। अध्ययन योग्य सामग्रियों की सूची के लिए अन्तिम पृष्ठ देखें।

पवित्र शास्त्र को मुखाग्र या कण्ठस्थ करने की एक वजह यह है कि हमारी याद रखने की क्षमता अल्प समय की होती है। 24 घण्टों के बाद आप ठीक-ठीक इतना ही याद रख सकते हैं :

जो कुछ आप सुनते हैं उसका 5%
जो कुछ आप पढ़ते हैं उसका 15%
जो कुछ आप अध्ययन करते हैं उसका 35%
जो कुछ आप देखते और सुनते हैं उसका 57%
जो कुछ आप मुखाग्र या कण्ठस्थ करते हैं उसका 100%

लोकप्रिय लेखक और सलाहकार हेनरी ब्रान्डेट् अपनी पुस्तक ''द हार्ट ऑफ द प्राब्लम्'' (समस्याओं से भरा मन) में कहते हैं :

''मैं अब भी बाइबिल को कंठस्थ कर लेने को अपनी सलाहों के दौरान और अपने मसीही जीवन में सहायता करने वाला एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण साधन मानता हूं''।

पवित्र शास्त्र को स्मरण करने को रोचक बनाएं

पदों को याद कर लेना वास्तव में देखा जाए तो बहुत आसान है :

एक पद से शुरु करें।
इसे कई बार दोहराएं।
अपने शब्दों में इसकी व्याख्या करें।
इसे अपने किसी मित्र को बताएं।
इसे व्यवहार में लाने के लिए परखें और एक-दूसरे को चुनौती दें।

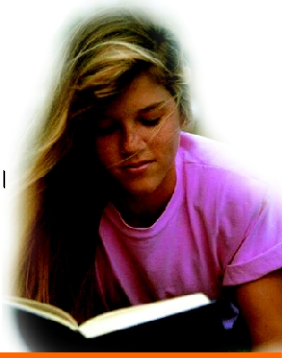

एक बार याद हो जाने पर, 30 दिनों तक बिना देखे इसको दोहराएं करें। जहां कहीं भी आप जाएं इसे अपना समझकर इसे अपने साथ लेते जाएं।

''जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे। तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से..... मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं।''

भजन संहिता 119:9,11

5 परमेश्वर के वचन पर कैसे मनन करें

परमेश्वर के अनन्त होने पर विश्वास के लिए इससे बेहतर और कोई तरीका नहीं है कि दिन-भर परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर मनन किया जाए। जब भी कोई मानसिक दबाव उत्पन्न करने वाली कोई घटना घटे (और घटेगी ही) तो अपनी स्थिति पर लागू होने वाले किसी एक पद को स्मरण करें।

प्र फिलिप्पियों 4:6 व 7 क्या बताते हैं ?

दासता के बन्धन से उबरने की सामर्थ्य

1977 में, न्यूयॉर्क शहर कोलाहल में डूबा हुआ था क्योंकि एक चौबीस वर्षीय व्यक्ति डेविड बर्कोविट्ज़ ने अशान्ति फैला रखी थी, जिस पर प्रचार-तन्त्र (मीडिया) ने, ''सैम का पुत्र'' होने का लेबल चिपका रखा था, जो कि अपने मनोरंजन के लिए हत्याएं किए जा रहा था। उसका निशाना युवा महिलाएं थीं; और अन्त में पकड़े जाने से पूर्व उसके हाथों पांच युवा महिलाएं और एक पुरुष मारे जा चुके थे।

जब वह जेल में समय गुज़ार रहा था, तो उस की मुलाकात एक युवा कैदी से हुई जिसका नाम रिकी लोपेज़ था, जिसने डेविड को बताया कि जो कुछ भी उसने किया उसको महत्व न देते हुए भी, यीशु ने उससे प्रेम किया और इसके लिए अपनी जान दी। रिकी ने डेविड को एक बाइबिल दी। जैसे ही डेविड बर्कोविट्ज़ ने बाइबिल को पढ़ा, परमेश्वर की सामर्थ्य ने उसकी दासता के बन्धन और लतों को तोड़ने का काम शुरु कर दिया। उसी समय में, परमेश्वर का वचन पूरे मन से पश्चात्ताप के छोर तक उसे ले आया - और ''सैम के पुत्र'' ने पूरी तरह से अपने जीवन को मसीह को समर्पित कर दिया।

आज, डेविड बर्कोविट्ज़ सलीवान कॅरेक्शनल फेसिलिटी की कलीसिया के प्रभारी पादरी के सहायक के तौर पर कार्यरत हैं। (इसे पढ़ें, और परमेश्वर की रूपान्तरण की सामर्थ्य एक ताज़ी सामर्थ्य गॉडज़ ट्रांसफार्मिंग पावर इन फ्रेश पावर) से सम्बन्धित कहानियां भी पढ़ें, जो कि जिम सिम्बाला द्वारा रचित हैं।)

डेविड बर्कोविट्ज़ बदल गया क्योंकि उसने मनुष्य के दृष्टिकोण के बदले परमेश्वर के दृष्टिकोण को अपना लिया। और, उसने परमेश्वर के दृष्टिकोण पर भरोसा रखा ! उसने अपनी ''नांद'' में उचित ''सामग्री'' को रख दिया।

तो..... क्या आप परमेश्वर के वचन को अपनी नांद और अपने जीवन को बदलने दे रहे हैं ?

अपनी ''नांद'' से ''कूड़े-करकट'' को त्यागकर इसके स्थान पर परमेश्वर के वचन को भर लेने में समय तो लगता ही है। जो कुछ समय आप बाइबिल में व्यतीत करने की प्रतिज्ञा करते हैं प्रायः वही मसीह में आपकी चाल शुद्ध होने का एकमात्र श्रेष्ठ संकेतक होता है, और यही मसीह में भविष्य की आपकी उन्नति की श्रेष्ठ भविष्यवाणी होती है।

''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो और सिद्ध ज्ञान सहित एक-दूसरे को सिखाओ, और चिताओ''।

कुलुस्सियों 3:16

''वर्ग पहेली'' के सभी ''टुकड़ों'' को आपका जीवन मसीह में अद्भुत बनाने के लिए किस बात की आवश्यकता होती है..... यह परमेश्वर के वचन के प्रति आपकी प्रतिज्ञा पर निर्भर करता है।

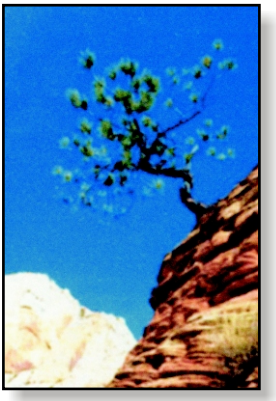

जब आप दौड़ दौड़ते हैं तो परमेश्वर ने भविष्य की आपकी आवश्यकताओं को निर्धारित कर दिया होता है, निश्चित कर लें कि आपकी जड़ें परमेश्वर के वचन में गहराई से बोयी गयी हैं..... बिल्कुल उस पेड़ के समान जो सूखी चट्टान पर बोया गया है और जीवित है..... क्योंकि इसकी जड़ें नीचे, गहरी मिट्टी में समायी हुई हैं।

प्र भजन संहिता 1:1-3 पढ़ें और अपने विचारों को लिखें :

_____

_____

प्र आपकी जड़ें कैसा काम कर रही हैं ?

_____

_____

5

परम संचार व्यवस्था

अपने स्वर्गीय पिता से बातचीत !

मान लीजिए कि किसी दिन आप अपने मित्रों के साथ आनन्द कर रहे हैं, और आपका सेल फोन बज उठता है। आप उत्तर देते हैं और एक अपरिचित सी, शक्तिशाली आवाज़ आपका नाम पुकारती है। आप पूछते हैं, ''कौन है ?''

आप पूरी तरह से सकते में आ जाते हैं जब उत्तर मिलता है, ''मैं तुम्हारा स्वर्गीय पिता हूं। मैं तुमसे बात करने के लिए फोन कर रहा हूं..... क्योंकि तुम मेरी सन्तान हो..... और मुझे बहुत दिनों से तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिला है !''

आपका क्या सोचना है, आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी ?

क्या आप स्वयं को विशिष्ट..... भयभीत..... रोमांचित..... सहमा हुआ..... दोषी महसूस करेंगे ?

परमेश्वर चाहता है कि आप उसे इतनी भली प्रकार से जान लें कि सदैव उससे बातचीत करने की इच्छा महसूस करें..... तब भी जब आपने पाप किया हो और उसके साथ संगति को तोड़ लिया हो। आपके पिता का मन कितना प्रेमी और क्षमा करने वाला है यह जानने के लिए लूका 15:11-32 में वर्णित ''उड़ाऊ पुत्र'' की कहानी पढ़ें।

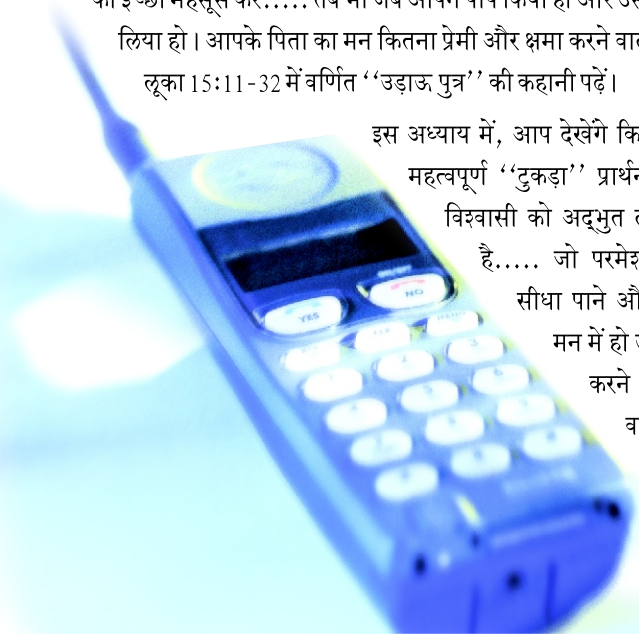

इस अध्याय में, आप देखेंगे कि-- वर्ग पहेली का एक महत्वपूर्ण ''टुकड़ा'' प्रार्थना किस प्रकार से एक विश्वासी को अद्भुत लाभ के तौर पर मिला है..... जो परमेश्वर की उपस्थिति को सीधा पाने और जो कुछ भी आपके मन में हो उसके बारे में उससे बात करने का माध्यम है। और, वह आपकी बात को सुनने का वायदा करता है।

सम्बन्ध..... नियम नहीं

जब आपने अपने जीवन में यीशु को आमंत्रित कर दिया है, तो परमेश्वर से आपके सम्बन्ध की शुरुआत हो चुकी है जो कि बहुत ही व्यक्तिगत और आत्मीय है। हर तरह के सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाने के लिए एक अच्छी मेल-मिलाप की बातों को करने वाली संचार व्यवस्था की आवश्यकता होती है।

क्रूस पर आपके लिए यीशु की मृत्यु ने आपके लिए यह सम्भव कर दिया कि आप स्वर्ग में विराजमान अपने पिता से सीधे ही बातचीत कर सकें। आपका पिता चाहता है कि आप हर समय उसके दिए मार्गदर्शन, सुख-चैन, शान्ति और प्रगाढ़ संगति की खोज में आप लगे रहें..... केवल तभी नहीं जब आपको इन सब वस्तुओं की चाह हो..... बल्कि हरेक समय।

''टुकड़ों'' को एक साथ जोड़ना

प्रार्थना को ''वर्ग पहेली'' के अन्य ''टुकड़ों'' की आवश्यकता है।

पवित्र आत्मा प्रार्थना में आपकी सहायता करता है।

विश्वास आपकी प्रार्थनाओं को प्रभावकारी बनाता है।

परमेश्वर का वचन आपको बताता है कि परमेश्वर कौन है और प्रार्थना कैसे करनी है।

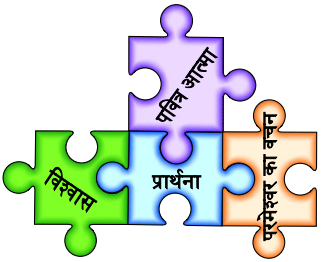

अब आप यीशु को जानते हैं, उससे उसकी सच्चाई को और अधिक प्रगट करने को कहकर आप इस अध्ययन की शुरुआत करें।

अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे, ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। यूहन्ना 16:24

अपने पिता को जानना

''हमारे मस्तिष्क में क्या बात आती है जब हम सोचते हैं कि परमेश्वर हमारे लिए सब से बढ़कर है''।

ए.डब्ल्यू. टोज़र

इस अध्ययन का पहला भाग परमेश्वर के चरित्र पर केन्द्रित होगा। तब आप जानेंगे कि आपका पिता कौन है..... और उसके साथ कैसे बात करें।

इससे पहले कि आप यह ग्रहण करने की कोशिश करें कि आप का पिता कितना अद्भुत है..... आपको यह जानने की आवश्यकता है कि उसकी महानता मनुष्य की समझ से परे है। लेकिन उसका वचन हमारे सम्मुख उस चित्र का एक पहलू प्रदर्शित करता है..... और यह वास्तव में अद्भुत है।

परमेश्वर के गुण

परमेश्वर प्रभुता - सम्पन्न है। (अधिपति)
परमेश्वर अनन्त है (सर्वदा उपस्थित)
परमेश्वर सर्वज्ञ है (सर्वज्ञानी)
परमेश्वर सर्वव्यापी है (हर जगह)
परमेश्वर सर्वशक्तिमान है (सबसे शक्तिशाली)
परमेश्वर अपरिवर्तनीय है (कभी न बदलने वाला)
परमेश्वर पवित्र है (धर्ममय और बेजोड़)
परमेश्वर न्यायी है (एकदम निष्पक्ष)
परमेश्वर प्रेम है (बिना किसी शर्त के स्वीकृति)
परमेश्वर सत्य है (पूर्णतः विश्वसनीय)

जब आप इस सूची को देखते हैं, और नीचे दिए गए विवरणों को, तो इनमें से हरेक के बारे में सोचने का समय निकालें कि कैसे हर एक अद्भुत गुण परमेश्वर के प्रति आपके दृष्टिकोण को प्रभावित करता है..... और उसके साथ आपके सम्बन्ध को।

परमेश्वर प्रभुता सम्पन्न है
(अधिपति)

परमेश्वर ही इस सारी सृष्टि का एकमात्र शासक है। उसे पूरा अधिकार है कि वह वही करे जो उसे प्रसन्न करता हो।

जब आप अपने पिता से बात करें, तो उसके पास विनम्रता से जाएं
और उसके परम अधिकार का आदर करें।

अय्यूब 1:6-12 पढ़ें। हर परिस्थिति में किसका नियन्त्रण था ?

प्र हर परिस्थिति में आप किस पर भरोसा कर सकते हैं ?

प्र रोमियों 8:28 का व्यक्तिगत रूप से आपके लिए क्या अर्थ है ?

परमेश्वर अनन्त है
(सर्वदा उपस्थित)

आप समय-सीमा में रहते हैं। परमेश्वर नहीं रहता। परमेश्वर सदा से अस्तित्व में था, और उसका अस्तित्व सदा रहेगा। जब आप स्वर्ग में परमेश्वर से मिलेंगे, तो आप सर्वदा के लिए उसके साथ रहेंगे। वह आपको अनन्त जीवन देता है।

जब आप अपने पिता से बात करें, तो आप आने वाले उस समय के बारे में सोचें जब आप सदा और सर्वदा के लिये उसके साथ होंगे ! अद्भुत !

प्र कौन सी दूसरी बात को परमेश्वर ने अनन्त बताया है (यशायाह 40:8)

प्र परमेश्वर का सिंहासन कब तक बना रहेगा (भजन संहिता 45:6)

परमेश्वर सर्वज्ञ है
(सर्वज्ञानी)

परमेश्वर आदिकाल की सभी बातों को जानता है। वह उन सभी बातों को जानता है जो अभी इस सृष्टि में हो रही हैं और वह उन सभी बातों को जानता है जो आने वाले भविष्य में घटने जा रही हैं।

प्र भजन संहिता 139 पढ़ें, और अपने विचारों को नीचे कलमबद्ध कर डालें।

जब आप अपने पिता से बात करें, तो उस तथ्य के बारे में सोचें कि वह जानता है कि आप क्या कहने जा रहे हैं..... इससे पहले कि आप उसे कहें। यहां तक कि वह यह भी जानता है कि आपके मन की गहराई में क्या चल रहा है। और, वह जानता है कि आपके लिए सर्वोत्तम क्या है !

परमेश्वर सर्वव्यापी है
(हर जगह)

यह सृष्टि लगभग तीन सौ अरब प्रकाश वर्ष से परे है..... और इसमें कम से कम दस हज़ार सौ अरब तारे हैं (पृथ्वी पर पायी जाने वाली समस्त बालू के कणों से भी अधिक) तब भी परमेश्वर हर एक तारे में विद्यमान है और अन्तरिक्ष के एक-एक इंच में समाया हुआ है।

प्र भजन संहिता 139:7 व 8 पर आपके विचार :

जब आप अपने पिता से बात करें, तो इस तथ्य पर विचार कर लें आप जहां कहीं भी जाते हैं..... वह वहां पहले से ही होता है। आपके जीवन की सबसे अन्धकारमय परिस्थिति में भी..... आप उसकी उपस्थिति का भरोसा कर सकते हैं।

परमेश्वर सर्वशक्तिमान है
(सबसे शक्तिशाली)

चूंकि परमेश्वर सबसे शक्तिशाली है, इसलिए उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। इस सृष्टि की रचना के लिए असीम शक्ति को जुटाना भी उसके लिए मात्र ''हाथों का कार्य'' है (भजन संहिता 8:3)।

भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने कहा :

''हे प्रभु यहोवा ! तूने बड़े सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है ! तेरे लिए कोई काम कठिन नहीं है !''

यिर्मयाह 32:17

जब आप अपने पिता से बात करें, विनम्रता से इस बात को महसूस करें कि वह कुछ भी कर सकता है, और हालांकि वह आपके जीवन के हर विस्तार के बारे में, ध्यान रखता है, ज़रा सोचें कि इस बारे में कि आपकी समस्याएं उसके अद्भुत होने की तुलना में कितनी छोटी हैं !

परमेश्वर अपरिवर्तनीय है
(कभी न बदलने वाला)

चूंकि हम हमेशा अपने मन के विचारों या मिज़ाज को बदलते रहते हैं..... तो ऐसे परमेश्वर की कल्पना करना कठिन है जो सर्वदा एक सा है, ''कल, आज..... और सर्वदा !'' (इब्रानियों 13:8)

जब आप अपने पिता से बात करें तो इस तथ्य पर विचार करें कि क्योंकि वह कभी नहीं बदलता है..... उसका प्रेम भी आपके लिए कभी नहीं बदलता है।
वह आपके मनोवेगों या कामों के अनुसार कभी अस्थिर नहीं होता है।
यह भी समझना महत्वपूर्ण है कि क्योंकि परमेश्वर कभी नहीं बदलता.....
तो उसका वचन भी कभी नहीं बदलेगा !

परमेश्वर पवित्र है
(धर्ममय और बेजोड़)

परमेश्वर अपने मन में कभी भी कोई अधर्मी विचार नहीं लाया है..... और न ही कभी लाएगा ! वह हर तरह से बिल्कुल पवित्र और सिद्ध है ! (भजन संहिता 145:17)

पाप परमेश्वर के स्वभाव के बिल्कुल ठीक विपरीत है..... और आपके लिए मसीह द्वारा क्रूस पर सही गई मृत्यु के बिना, आप पूरी तौर से उसकी उपस्थिति से अलग हो गए होते। परमेश्वर की पवित्रता व्याख्या से परे है।

प्र प्रकाशित वाक्य 20:12-15 पढ़ें, और अपने विचार प्रस्तुत करें :

_____

_____

जब आप अपने पिता से बात करें, उसकी धार्मिकता और पवित्रता के बारे में विचार करें..... और सोचें कि यीशु ने आपके लिए कैसे यह सम्भव कर दिया है कि आप सीधे ही उसकी अद्भुत उपस्थिति में आ जाएं।

परमेश्वर न्यायी है
(एकदम निष्पक्ष)

परमेश्वर सृष्टि का परम प्रधान न्यायाधीश है। वह ग़लती नहीं कर सकता..... और हमेशा एकदम निष्पक्ष है। इसके सामने कोई भी ''पुर्नविचार या अपीलों का न्यायालय'' नहीं है। (यिर्मयाह 9:24)
परमेश्वर आपके पाप के विषय में ''कोई दूसरा मार्ग नहीं खोजता''।

जब आप अपने पिता से बात करें, इस तथ्य पर विचार करें।
वह अपनी खराई के माप-तौल में हमेशा निष्पक्ष ठहरेगा।
आपको उस पर तब भी भरोसा रखने की आवश्यकता है जब आप यह सोचें कि वह आपके लिए निष्पक्ष नहीं रहा। (उत्पत्ति 18:25 ब)

परमेश्वर प्रेम है
(बिना किसी शर्त के स्वीकृति)

परमेश्वर कभी भी आपको कम प्रेम नहीं करेगा..... और वह आपको अधिक प्रेम भी नहीं कर सकता !

बाइबिल हमें बताती है कि परमेश्वर अपने भीतर सिर्फ़ प्रेम ही नहीं रखता..... बल्कि यह हमें बताती है कि ''वह प्रेम है !'' (यूहन्ना 4:16)

वास्तविकता तो यह है कि आपके पिता ने यीशु को आपके लिए क्रूस पर पीड़ा सहने और मृत्यु को प्राप्त होने के लिए भेजा..... जो आपके लिए उसके प्रेम की गहराई को दर्शाता है। (यूहन्ना 3:1)

जब आप अपने पिता से बात करें, तो उस ऊंचे दाम के लिए सोचें जो उसने आपके उद्धार के लिए चुकाया, हालांकि आप कभी भी सम्पूर्ण रीति से इस बात को न ही समझ पाएंगे और न ही इसे सराहेंगे। तब भी उसका धन्यवाद करें !

परमेश्वर सत्य है
(पूर्णतः विश्वसनीय)

परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता। हर एक बात जो वह कहता है, सत्य है (तीतुस 1:2)

प्र यूहन्ना 14:6 में ''सच्चाई'' होने का दावा किसने किया ?

प्र यूहन्ना 17:17 में यीशु ''सच्चाई'' किसे बताते हैं ?

चूंकि परमेश्वर ''सच्चाई'' है, तो आप उस पर भरोसा कर सकते हैं..... और आपके लिए की गयी उसकी प्रतिज्ञाओं पर आप हमेशा भरोसा कर सकते हैं।

जब आप अपने पिता से बात करें, तो बाइबिल में की गयी प्रतिज्ञाओं के लिए उसका धन्यवाद करें। उसके साथ..... एक-एक करके..... प्रतिज्ञाओं को दोहराएं। उसे बताएं कि आप इस पर भरोसा करना चाहते हैं !

1 इतिहास 29:11-13 में वर्णित दाऊद की प्रार्थना पढ़ें और प्रार्थना करें।

हियाव बान्धकर प्रार्थना करें

अब आप यह देखना शुरु करें कि आपका स्वर्गीय पिता कितना अद्भुत है, हो सकता है कि प्रार्थना में आप उसे सम्बोधित करने से डरें। परमेश्वर का वचन बताता है कि उसकी सन्तान होने के नाते, उसकी उपस्थिति में सदैव आपका स्वागत है। उसके सम्मुख..... हियाव बान्धकर आएं!

''इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे''।

इब्रानियों 4:16

दीनता के साथ प्रार्थना करें

हालांकि परमेश्वर आपसे सभी परिस्थितियों में बात करना चाहता है, परन्तु यह भी महत्वपूर्ण है कि आप उसके सम्मुख दीनता भरा मन लेकर आएं (1 पतरस 5:5-6)। परमेश्वर अभिमानी मनुष्य के विरुद्ध है, और चाहता है कि आप पूरी रीति से उसके स्रोतों पर निर्भर हों।

आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना करें

परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रार्थना करें

परमेश्वर ने आपको अपना वचन यह शिक्षा देने के लिए दिया है कि कैसे आशापूर्ण ढंग से, और भरोसे के साथ आप प्रार्थना करें। निम्नलिखित प्रार्थना के सिद्धान्तों को सीखें, और पवित्र शास्त्र में वर्णित सन्दर्भों पर दृष्टि डालें, और तब..... आशापूर्ण रीति से प्रार्थना करें!

केवल परिवार

परमेश्वर अपनी सन्तानों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। वह ग़ैर-मसीहियों की प्रार्थनाओं को भी सुनता और उनका उत्तर देता है, जब वे अपने पापों की क्षमा के लिए विश्वास के साथ मसीह के पास आते हैं। (यूहन्ना 16:24)

मसीह में बने रहने वालों के लिए उत्तर

यीशु ने कहा कि जो मसीहियत में बने रहने वाले मसीही हैं वे अपनी प्रार्थनाओं के सुने जाने के कारण अपनी प्रार्थनाओं में भरोसा रख सकते हैं..... परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उनका उत्तर मिलते रहने के द्वारा।

प्र यूहन्ना 15:7 क्या कहता है ?

प्र भजन संहिता 66:18-20 क्या कहता है ?

''तेरी इच्छा पूरी हो''

जब आप अपने पिता के पास आएं तो जो गुण आप में होना चाहिए उसे आदर्श रूप में यीशु ने स्वयं प्रस्तुत किया। आपको अपनी इच्छा से बढ़कर उसकी इच्छा की कामना करनी चाहिए; हालांकि यह बात स्वीकारने के लिए कठिन भी हो सकती है। मरकुस 14:32-40 पढ़ें।

''और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। और जब हम सुनते हैं कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया है''।

1 यूहन्ना 5:14

अब यह कि आप उसे जानते हैं, तो आप आश्वस्त हो सकते हैं..... अगर आप उसमें बने हुए हैं..... तो वह हर उस प्रार्थना का उत्तर देगा जो उसकी सिद्ध इच्छा के अनुसार है।

परमेश्वर का उचित समय निर्धारण

जिन प्रार्थनाओं का उत्तर तत्काल नहीं मिलता, उन्हें मांगना न छोड़ दें। आत्मा द्वारा नियन्त्रित मसीहियों की एक पहचान ''धीरज'' है। (गलतियों 5:22)

अनगिनत मसीही आपको बरसों-बरस लगातार प्रार्थना के बाद प्रार्थनाओं के उत्तरों को देने की परमेश्वर की विश्वसनीयता की कहानियां आपको बताएंगे।

आपका प्रार्थनामय जीवन

जब आपने यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित कर लिया है तो आप अपना प्रार्थनामय जीवन परमेश्वर के परिवार के एक सदस्य होने के नाते आरम्भ कर दें।

प्र तब से कैसा चल रहा है ?

प्र क्या अन्तर है ?

अपने दिन की शुरुआत करें

यदि आप उन्नति के लिए मसीह से सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं तो प्रत्येक सुबह उससे भेंट करने की योजना बनाएं पढ़ें (7 मिनट्स विथ गॉड - हाऊ टू प्लान ए डेली क्वाइट टाइम (परमेश्वर की संगति में 7 मिनट - कैसे एकान्त समय की योजना बनाएं)) (नेव प्रेस)।

अधिकतर मसीही जो मसीह में बनकर रह रहे हैं, अपने दिन की शुरुआत ''एकान्त समय'' से करते हैं। ''ज़मीन पर पैर रखने से पहले'' आप परमेश्वर से बातचीत करना आरम्भ कर सकते हैं; जैसे ही आप बिस्तर से उठते हैं। कुछ ऐसा कहें :

''शुभ प्रभात, प्रभु ! आज, जाने से पहले, मैं बस यह चाहता हूंकि आप जान लें कि मैं आपसे प्रेम करता हूं..... और आज मैं आपके लिए जीना चाहता हूं!''

उसकी प्रतिज्ञाओं के दावे करना

यदि आप वास्तव में एक अद्भुत दिन बिताना चाहते हैं, तो परमेश्वर की कुछ प्रतिज्ञाओं में अपने आपको बांध लें, और अपने उस दिन में उसको लागू करें। इस तरह :

''तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा''।

नीतिवचन 3:5 व 6

प्रार्थना करें : ''प्रभु, आज, मैं अपने मार्गों को सीधा बनाने के लिए तुझ पर भरोसा कर रहा हूं, और अपने जीवन की हर परिस्थिति में तुझी को स्मरण करने जा रहा हूं''।

संगति को पुनः स्थापित करना (पश्चात्ताप के द्वारा)

जब आप बहक जाएं और ठोकर खाएं, और ऐसा महसूस करें कि किसी को आप की चिन्ता नहीं, तो अपने प्रभु की प्रतीक्षारत बाहों की ओर दौड़ें। वह आपको शान्ति और विश्राम देगा और आपकी आंखों से आंसुओं को पोंछ डालेगा। (पढ़ें : रोमियों 8:26-27)

पवित्र आत्मा से पुनः संगति स्थापित करने के लिए, सहज रूप से बता दें कि आपने पाप किया है (उस पाप का नाम लें) और उसे अपने जीवन पर अधिकार करने की प्राथमिकता दें। तब वह अपनी संगति में आपको वापिस ले लेगा। (1 यूहन्ना 1:9)

उसे धन्यवाद दें, उसकी प्रशंसा करें, और उसकी स्तुति करें

परमेश्वर ने आपके लिए इतना कुछ किया है कि आवश्यकता है कि उसे धन्यवाद देने के लिए, और उसके प्रेम और अनुग्रह के बारे में विचार करने के लिए कुछ समय निकालें।
भजन संहिता की पुस्तक पढ़ें और जबकि आप बहुत से स्तुतिगान पढ़ते हैं..... तो रुकें और उसे अपने लिए बना लें। उसकी महानता और आपके लिए उसके महान प्रेम को स्मरण करें..... और उसकी प्रशंसा करें।

(भजन संहिता 95,107 व 145-150 के साथ आरम्भ करें)

विनतियां

परमेश्वर चाहता है कि आप अपनी विनतियां उस तक लाएं। वास्तव में आपके ऐसा करने से वह प्रसन्न होता है, क्योंकि यह विश्वास और आज्ञाकारिता का कर्म है। जो बातें उसकी इच्छा और बाइबिल के अनुसार हैं, उसके विषय में उससे पूछना कभी न छोड़ें। उसके द्वारा ठहराए गए उचित समय में..... वह उन प्रार्थनाओं का उत्तर देने की प्रतिज्ञा करता है!

''किसी भी बात की चिन्ता मत करो : परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिल्कुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी''।

फिलिप्पियों 4:6, 7 अ

तो..... क्या आप अपने अद्भुत पिता से बात कर रहे हैं ?

सुझाव : अगले 30 दिनों के लिए एक प्रार्थना सूची शुरु करें। तब इसे जारी रखें।

निम्न बातों को लिख लें :

मसीह में आपकी व्यक्तिगत उन्नति।
उन ख़ास मुद्दों के लिए प्रार्थना जिनसे होकर आप गुज़र रहे हैं।
परिवार और मित्रों के लिए प्रार्थना।
उन ग़ैर मसीहियों के लिए प्रार्थना जिन्हें आप चाहते हैं कि वे मसीह को जानें।
उन अन्य मसीहियों के लिए प्रार्थना जिनकी उन्नति में आप सहायता कर सकते हैं।

क्या आप यह देखना आरम्भ कर रहे हैं कि कैसे सभी टुकड़े एक साथ सही रीति से जुड़ते हैं।

यदि आप परमेश्वर का वचन पढ़ रहे हैं, और पवित्र आत्मा को अपने जीवन को नियन्त्रित रखने की अनुमति दे रहे हैं..... तो सम्भवतः आप उसके साथ और अधिक बातें कर सकेंगे। ज्यों ही आप इन सारे टुकड़ों को एक साथ रखते हैं, आपका विश्वास बढ़ने लगेगा।

जब ये सारी बातें एक साथ होना शुरु होती हैं..... जीवन वास्तव में अद्भुत होता चला जाता है !

अगले अध्याय में, आप यह देखेंगे कि कैसे दूसरे अन्य विश्वासियों के साथ आप मसीह की देह में एक साथ उन्नति कर रहे होते हैं !

अगले महत्वपूर्ण ''टुकड़े'' ''परम सम्बन्ध'' के लिये तैयार हो जाइए !

इस महत्वपूर्ण विषय के बारे में और अधिक पढ़ने के लिए, निम्नलिखित पुस्तकें सुझाव हेतु हैं : इन्टीमेसी विथ द अलमाइटी (स्विन्डॉल) (सर्वशक्तिमान के साथ घनिष्ठता), फ्रेश विन्ड, फ्रेश फायर (ताजी हवा, ताजी आग) सिम्बाला, ह्यूमिलिटि (विनम्रता) (मुरे), 31 डेज ऑफ प्रेज़ (स्तुति के 31 दिन) (मायर्स)

परमेश्वर का अद्भुत परिवार..... और आप !

''वर्ग पहेली'' का अगला ''टुकड़ा'' आपकी मसीह में उन्नति के लिए, मसीही संगति है..... परमेश्वर के अद्भुत परिवार में दूसरों के साथ उचित रीति से जुड़ना।

क्या आप बड़े परम सम्बन्ध बनाना चाहते हैं ? अद्भुत सम्बन्ध ? परम सम्बन्ध ? परमेश्वर भी आपके लिए ऐसा ही चाहता है। और, उसका पवित्र आत्मा ऐसे सम्बन्धों को सम्भव बनाता है।

जैसे-जैसे आप परमेश्वर के विश्वास में बढ़ते जाते हैं दूसरों के साथ परम सम्बन्ध बनते चले जाएंगे।..... और उन दूसरे विश्वासियों के साथ जो परमेश्वर की इस बड़ी ''दौड़'' में विजयी बनने के लिए एक साथ प्रशिक्षण ले रहे हैं, उनके साथ शामिल हो जाइए।

मसीही संगति ''वर्ग पहेली'' का एक ऐसा महत्वपूर्ण ''टुकड़ा'' है जिसे आप लगातार प्राथमिकता देना चाहेंगे।

6

जुड़े रहें !
परम सम्बन्ध
स्वर्ग के वासी

पौलुस प्रेरित ने हरेक विश्वासी को स्वयं को भवन का एक भाग होने जैसा सोचने को कहा..... यीशु जिसका ''कोने का पत्थर'' है।

''तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो..... तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का वंश और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो.....''।

1 पतरस 2:5 व 9

अपनी सन्तानों में से एक होने के नाते परमेश्वर आपके विषय में अद्भुत बातें बता रहा है। वह बता रहा है कि आप और दूसरे अन्य विश्वासी लोग हैं :

उसके आत्मिक भवन में जीवते पत्थर की नाईं
चुने हुए लोग या चुना हुआ वंश
राज-पदधारी याजकों का समाज
उसकी निज प्रजा
परमेश्वर के पवित्र राज्य के नागरिक

कोई बात नहीं, कि आपकी त्वचा का रंग कैसा है, आप कितने चुस्त हैं, आप कितने सुन्दर हैं, आप किस लिंग के हैं, या आप कितने धनी हैं या महत्वपूर्ण हैं..... सभी समय के विश्वासियों के साथ आप मसीह की देह का एक अंग हैं। आप परमेश्वर के देश..... स्वर्ग के पूरी तौर से वासी हैं! (इफिसियों 2:19)

प्र आपके विचार : _____

_____

_____

मसीह का स्थानीय संगठन

सभी समयों के मसीहियों को मिलाकर, आप, मसीह की देह, कलीसिया को तैयार करते हैं।

बाइबिल भी स्थानीय विश्वासियों के जमा होने को 'कलीसिया' का दर्जा देती है।

यीशु ने मुझसे और आप से एक अद्भुत प्रतिज्ञा की हुई है।

जब हम उसे अपना लक्ष्य मानकर..... एक साथ जमा होते हैं.....
वह वहां उपस्थित होता है :

मत्ती 18:20

आरम्भिक कलीसिया

प्रेरितों के काम नामक पुस्तक आरम्भिक कलीसियाओं की स्थापना का वर्णन करती है, जो शुरुआत में घरों में हुआ करती थी। नये नियम की पत्रियां प्रेरितों द्वारा उनको लिखी गयी शिक्षाएं हैं। जो कुछ भी पवित्र आत्मा के द्वारा सिखाया गया और आज्ञा के रूप में आरम्भिक विश्वासियों को मिला आज की कलीसिया पर लागू होता है।

आरम्भिक कलीसिया के लोगों का समर्पण इतना दृढ़ था, और एक दूसरे के लिए उनका प्रेम इतना महान् था, कि तीन सौ वर्ष के अन्तराल में ही, सम्पूर्ण रोमी साम्राज्य में मसीहियत फैल चुकी थी। उन्होंने मसीह के लिए अपने संसार को सचमुच बदल डाला था !

आरम्भिक कलीसिया का उदाहरण

एक दूसरे के प्रति आरम्भिक मसीही कितने समर्पित थे, इसको समझने के लिए, नये नियम में प्रेरितों के काम नामक पुस्तक पढ़ें।

प्र प्रेरितों के काम पुस्तक पढ़ने पर आपके सामने सबसे अधिक खुलकर क्या बात आती है ?

प्र पौलुस, पतरस और दूसरे प्रेरितों के लिए अन्य विश्वासी कितने महत्वपूर्ण थे ?

प्र आपके लिए दूसरे अन्य विश्वासी कितने महत्वपूर्ण हैं ?

प्र आप अन्य विश्वासियों के साथ परम सम्बन्धों को विकसित करने के लिए क्या कर रहे हैं ?

''जुड़े'' रहना

बहुत से मसीहियों के लिए हारा हुआ जीवन जीने के कारणों में से एक मुख्य कारण यह है कि, उन्होंने अपने आपको दूसरे अन्य विश्वासियों से अलग कर रखा है।

पौलुस ने आरम्भिक मसीहियों को बताया कि उनमें से हरेक ''मसीह की देह'' का एक-एक महत्वपूर्ण ''अंग'' हैं।

आपके देह का हरेक अंग महत्वपूर्ण होता है। यदि आपके पैर की सबसे छोटी उंगली भी चोट खाती है, तो वह आपके पूरे दिन को कष्टमय बना सकती है। न दिखायी देने वाले अंग, जैसे हृदय, जिगर और गुर्दे आपकी पूरी देह को जीवन प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसी के समान मसीह की देह भी है।

1 कुरिन्थियों 12:14-27 पढ़ें, और लिखें कि पौलुस ने ''देह'' के प्रत्येक अंग के विषय में क्या कहा :

प्र ''प्रधान'' कौन है ?

प्र ''सदस्य'' कौन हैं ?

प्र क्या कोई ''सदस्य'' अनावश्यक है ?

प्र सबसे अधिक आवश्यक ''अंगों'' में से कौन-कौन से हैं ? (पद 22)

जब आप दूसरे अन्य विश्वासियों के साथ, जो मसीह में उन्नति कर रहे हैं, एक साथ जुड़ जाते हैं, तो आप में से प्रत्येक दूसरे का हौसला बढ़ाए, और एक दूसरे को आपसी विश्वास में ''जोश'' दिलाते रहें। आप एक दूसरे की संगति में आनन्द मनाएं और साथ-साथ अर्थपूर्ण सम्बन्धों को बनाते चलें।

मसीह के नाम में दूसरे विश्वासियों के साथ-साथ आगे बढ़ते रहना ठीक ऐसा ही है जैसा कि गर्म कोयले जब एक साथ जलते हैं तो एक दूसरे को गर्म रखते हैं। हालांकि, वह कोयला जो दूसरे

अद्भुत वरदान

आप परमेश्वर की अनुपम रचना हैं। उसने आपको अद्भुत वरदान दिये हैं जो कि मसीह की देह (कलीसिया) के लिए आवश्यक हैं। 1 कुरिन्थियों 12:4-11 में, पौलुस आपके वरदानों के विषय में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताता है :

प्र आपको, आपके वरदान किसने दिए हैं ? (पद 11) _____

प्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण कौन सा वरदान है ? (पद 21-23) _____

प्र आपको किसके बारे में चेताया गया है ? (पद 25) _____

प्र आपको दूसरों के लिए क्या करना है ? (पद 26) _____

शैतान बहुत से मसीहियों को यह समझाकर बरगलाने में बहुत ही चालाक है कि वे पृथ्वी पर मसीह के काम के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं। बहुत से लोग परमेश्वर के काम को करना उनके लिए छोड़ देते हैं जिनके वरदान स्पष्ट रूप से दिखायी देने वाले हैं..... जैसा कि भाषा को बोलने का वरदान। परमेश्वर के वचन में स्पष्ट है कि हरेक वरदान उस के राज्य के लिए महत्वपूर्ण है!

यीशु के महानतम आदेश ..... ''संसार के कोने-कोने में जाओ और हरेक को परमेश्वर का सुसमाचार बताओ'' के लिए मसीह की पूरी देह (कलीसिया) को अधिकार मिला है और वरदान मिले हैं कि वे इस काम को पूरा करें। परमेश्वर के लिए कलीसिया के अगुवों और कलीसिया के सामान्य सदस्यों के मध्य कोई भेदभाव नहीं है।

एक तरह से, कलीसिया में आपकी भूमिका बास्केट बॉल के खिलाड़ी, फुटबाल या फुटबाल टीम के खिलाड़ी के समान है। जब तक कि हरेक खिलाड़ी अपने गुणों और दृढ़ता के साथ न खेले तो खेल हारा भी जा सकता है। जीतने के लिए, हरेक खिलाड़ी को अपनी भूमिका अच्छी तरह निभानी होती है।

परमेश्वर के विजयी दल का महत्वपूर्ण हिस्सा होने के नाते, आपको उसी स्थान पर खेलने की आवश्यकता है जिसकी योग्यता उसने आपको खेलने के लिए वरदान के तौर पर दी है।

परम सम्बन्धों की कुंजी

यीशु आपके मनों को जानता है। एक दूसरे के साथ समय-समय पर घटने वाली हम सब की सारी कठिनाइयों को वह जानता है। मनुष्य होने के नाते हम सब गप शप करने, गुण-दोषों को परखने, क्रोध करने और एक दूसरे पर दोषारोपण करने की परीक्षाओं में पड़ जाते हैं।

और तब भी, यीशु सम्पूर्ण मन से हमसे यह इच्छा करता है कि हम सब एक दूसरे से प्रेम करें..... और संसार को वह अपना प्रेम आदर्श रूप में दर्शाता है। अपने अन्तिम, कुछेक वक्तव्यों में उसने अपने को क्या कुछ बताया उसे सुनें :

''मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो''।

यूहन्ना 13:34-35

कितनी बार इस आज्ञा का उल्लंघन करके हम यीशु को असफल कर चुके हैं ?

दुर्भाग्यवश, अक्सर ही।

परम सम्बन्धों तक पहुंचने की कुंजी प्रेम है..... परन्तु हम इस तक कैसे पहुंचें ? इसका उत्तर परमेश्वर हमें तीमुथियुस को पौलुस द्वारा लिखे गए एक पत्र में देता है :

''क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है''।

2 तीमुथियुस 1:7

प्र इस पद को ध्यान से देखें। प्रेम किसकी ओर से आता है ?

जैसा कि आपने अध्याय 3 में सीखा, प्रेम ''आत्मा का फल'' है, और पवित्र आत्मा द्वारा उन सब लोगों को दिया गया फल है जो उस में बने रहते हैं।

चूंकि ''प्रेम'' परम सम्बन्धों का मार्ग है, तो यह जानना महत्वपूर्ण है कि वास्तव में प्रेम का क्या अर्थ है, और दूसरों के साथ आपके प्रतिदिन के मिलने-जुलने में यह क्या ''भूमिका'' निभाता है। (पढ़ें गलतियों 5:22)

कुरिन्थियों की कलीसिया ''बालकपन वाले'' मसीहियों से भरपूर थी जिन्हें पौलुस ''सांसारिक'' या ''शारीरिक'' रीति से चलने वाले कहता है। उन्होंने मसीह के प्रेम को तो अपने लिए स्वीकारा था, परन्तु एक दूसरे को अधिकतर स्वार्थीपन के व्यवहार के दृष्टिकोण से अपनाते थे। वे डाह रखने वाले थे, और लगातार झगड़ने और बकवाद करने वाले थे। (1

प्र आपका क्या विचार है कि इस तरह के व्यवहार का क्या समाधान है ?

पौलुस ने कुरिन्थियों को बताया कि यदि वे पवित्र आत्मा के नियंत्रण में होकर चलते हैं तो उन्हें मसीह का प्रेम कैसा लगने लगेगा :

''प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है''। 1 कुरिन्थियों 13:4-7

1 कुरिन्थियों का सम्पूर्ण 13 वां अध्याय पढ़ें, और अपने विचार लिखें :

यदि आप इस पुस्तक के अध्याय तीन को दोहराते हैं, तो पवित्र आत्मा आपको विश्वास के द्वारा मसीह के प्रेम सहित प्रेम करने की अपनी परम सामर्थ्य देता है। आप स्वयं इसे उत्पन्न नहीं कर सकते। प्रेम मसीह में बने रहने का प्रतिफल है।

विश्वास द्वारा प्रिय बनना

कोरी टेन बूम उन कुछेक महिलाओं में से एक थी, जो द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजियों के क़ैदी शिविर..... रेवेन्सब्रक में दी गई यातनाओं और अमानवीय पीड़ा भोगने के बाद भी जीवित बच निकली थी।

कोरी का मसीही विश्वास दृढ़ बना रहा, उन समयों में भी जब उसे और अन्य दूसरी महिलाओं को क़ैदखाने में क्रूर पुरुष सुरक्षाकर्मियों के सामने नग्नावस्था में जुलूस के रूप में घुमाया गया।

युद्ध अब समाप्त हो चुका था, और कोरी ने स्वयं को मसीही प्रेम और क्षमादान के विषय बताने के लिए कलीसियाओं में जाने के लिए समर्पित कर दिया।

एक दिन म्यूनिख में एक कलीसियाई सभा में कोरी एक एसे व्यक्ति को देखकर भौंचक्की रह गयी, जो कि उसका भूतपूर्व सुरक्षाकर्मी उस समय रह चुका था जब उसे व अन्य महिलाओं को पशुओं के समान झुण्ड में नहलाया गया था।

कोरी उस घटना का स्मरण अपनी पुस्तक, द हाइडिंग प्लेस में करती हैं :

''वह मेरे पास आया.....'मैं आपके सन्देश के लिए कितना आभारी हूं'..... यह सोचकर, जैसा कि आपने कहा, उसने मेरे सारे पाप धो डाले हैं!''

उसका हाथ मुझसे हाथ मिलाने के लिए उठ गया था, और मैं जो कभी-कभी ही प्रचार किया करती थी..... मुझे आवश्यकता थी क्षमा कर देने की, पर मैंने अपना हाथ अपनी ही ओर रखा। हालांकि क्रोध और बदले की भावना से भरपूर विचार मेरे मन में उबल रहे थे, मैंने उनके पापों पर दृष्टि डाली, यीशु मसीह ने इस मनुष्य के लिए अपनी जान दी, क्या मैं कुछ और मांगने जा रही थी?

'प्रभु यीशु' मैंने प्रार्थना की, ''मुझे क्षमा करें और इसे क्षमा करने में मेरी सहायता कीजिए''।

मैंने मुस्कुराने की कोशिश की, मैंने अपना हाथ बढ़ाने में संघर्ष किया, पर कर न सकी। मैंने कुछ भी न महसूस किया, गर्मजोशी और क्षमाशीलता की एक हल्की सी चिंगारी भी नहीं। अतः मेरे मुंह से एक मौन प्रार्थना निकली।

''यीशु मैं इसे क्षमा नहीं कर सकती, आप मुझे अपनी क्षमाशीलता प्रदान कीजिए''।

''जैसे ही मैंने उसका हाथ थामा एक अत्याधिक आश्चर्यजनक घटना घटी। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे कन्धे से होकर, मेरी बांह से होकर, मेरे हाथ से होकर उसके हाथ तक एक करेन्ट सा होकर गुजरा, तभी मेरे हृदय में उस अजनबी व्यक्ति के लिए एक ऐसा प्रेम कौंधा जिसने मुझे भावुक कर दिया। और इस प्रकार मैंने अनुभव किया कि हमारी यह क्षमाशीलता हमारी ओर से नहीं वरन् उसकी ओर से है जिस पर सारे संसार की चंगाई निर्भर है''।

''जब वह हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करने को बताता है, तब वह अपनी इस आज्ञा के साथ हमें अपना प्रेम भी प्रदान करता है''।

(द हाइडिंग प्लेस - छुपने का स्थान, फ्लेमिंग एच. रेवेल कं.)

कोई बात नहीं कि कोरी ने कितना कठिन प्रयास किया..... फिर भी उसमें इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह अपने इस पुराने शत्रु को जिसने उसके साथ अमानवीय व्यवहार किया था, प्रेम बनाए रखती।

तब भी वह यह जानती थी कि मसीह ने उसको एक दूसरे से..... अपने शत्रुओं से भी प्रेम करने की आज्ञा दी है।

विश्वास के द्वारा..... कोरी ने अपने पाप का अंगीकार किया, और इस मामले को परमेश्वर को सौंप दिया। उसके विश्वास का प्रतिफल आज्ञा पालन करने की सामर्थ्य के रूप में मिला। और उसकी आज्ञाकारिता का प्रतिफल उसके लिए वह महान आनन्द और शान्ति लेकर आया जो

प्र क्या आपके जीवन में ऐसे लोग हैं जिन्हें आप क्षमा नहीं कर सकते ?

प्र परमेश्वर आप से क्या करने के विषय में बताता है ? (इफिसियों 4:32)

अपने क्षमा न कर पाने वाले स्वभाव का अंगीकार करने के लिए परमेश्वर के साथ एकान्त में कुछ समय बिताएं, और पवित्र आत्मा से आपके द्वारा उन्हें क्षमा करने के लिए कहें। यदि आप उसमें बने हुए हैं, तो वह आपको सामर्थ्य देगा !

और..... तब इस दौड़ को दौड़ने के लिए अन्य विश्वासियों के साथ शामिल हो जाएं।

प्र हमारे लिए दूसरों को क्षमा करने का सबसे बड़ा उदाहरण यीशु हुआ ? लूका 23:34 में उसने किसे क्षमा किया ?

तो क्या आप दूसरे अन्य विश्वासियों के साथ जुड़ने को तैयार हैं ?

दूसरों के साथ ''संगति रखना'' वास्तव में बहुत ही अद्भुत है..... जो मसीह से प्रेम रखते हैं और उसके लिए जी रहे हैं ! जब हरेक विश्वासी अपने वरदान का प्रयोग कर रहा होता है, तो दरअसल यह उस 'एकता' को स्थापित करता है जिसके लिए यीशु ने हमारे लिए प्रार्थना की। (यूहन्ना 17:21)

इसलिये याद रखें..... मसीह में बने रहना ही प्रेम करने का मार्ग है और प्रेम ही हरेक सम्बन्ध का मार्ग है !

शुरुआत कैसे करें :

परमेश्वर से आपको दूसरों तक पहुंचाने के लिए कहें।
बाइबिल शिक्षण और दूरस्थ स्थानों तक पहुंचने वाली कलीसिया की संगति करें।
छोटे बाइबिल अध्ययन और प्रार्थना समूह के साथ शामिल हों।
मसीह के लिए दूसरों तक पहुंचने में अपने वरदानों का इस्तेमाल करें।
एक परिपक्व विश्वासी को खोजें जो आपको ''शिष्य'' बनाएगा।
किसी ऐसे व्यक्ति को परमेश्वर से मांगें जिसे आप शिष्य बना सकें।

''..... यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है''।

1 यूहन्ना 1:7 अ

प्र इब्रानियों 10:24 व 25 पढ़ें
आप इन पदों के अनुसार जीवन जीने की क्या योजना तैयार करते हैं :

_____

_____

_____

_____

_____

_____

7

परम पुरस्कार
आज्ञाकारिता
स्वर्ण पदक की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना !

यूहन्ना 15 में यीशु हमें बताता है कि यदि हम उसके लिए फल उत्पन्न कर रहे हैं तो उसमें बने रहने वाला जीवन आवश्यक होता है। यीशु हमें यह भी बताता है कि उसमें बने रहने के लिए सिर्फ़ एक मार्ग है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें।

> **''यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं''।**
>
> यूहन्ना 15:10

यदि आप वास्तव में उस परम पुरस्कार के लिए दौड़ रहे हैं जो परमेश्वर ने आपके लिए रख छोड़ा है..... और ''स्वर्ण पदक की प्राप्ति के लिए प्रयत्न कर रहे हैं'' तो आपका उद्देश्य मसीह को उसकी आज्ञाओं को मानने के द्वारा प्रसन्न करना होना चाहिए।

यीशु ने कहा,

''यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानो''।

सम्पूर्ण मसीही जीवन विश्वास द्वारा जीना होता है न कि कार्यों द्वारा। दूसरे धर्म अनुसरण के लिए नियमों की सूचियां देते हैं। लेकिन जब हम यह देखते हैं कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करता है, और यीशु ने हमारे पापों के लिए भारी दाम चुकाया तो हम उसकी आज्ञा मानना चाहेंगे। अपने जीवन भर पवित्र आत्मा पर भरोसा करने के प्रतिफल के रूप में उसके वचन का आज्ञापालन करने वाला जीवन मिलेगा।

जब मसीही चाल-चलन में आप उतनी शीघ्रता से उन्नति नहीं कर पाते जितनी शीघ्रता से आप चाहते हैं तो निराश न हों। मसीह में उन्नति जीवन भर चलने वाली एक प्रक्रिया है। परमेश्वर आपके लिए धीरज धरता है और आपसे अपने प्रेम को कभी दूर नहीं करेगा। हालांकि, जिस किसी भी क्षण आप पवित्र आत्मा की आज्ञा को मानना चुनते हैं वह आपको विजयी बनाएगा।

बहुत से मसीही कहते हैं कि वे अपने जीवन भर परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, लेकिन उसके वचन को मानने से इन्कार करते हैं। याकूब उनके विश्वास को ''मरा हुआ'' कहता है। बने रहने वाला जीवन कैसे भी करके, विश्वास के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करके जिया जाता है तब भी जबकि हम परीक्षाओं से गुज़र रहे हों और न समझ पाएं कि परमेश्वर किस प्रकार से हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने जा रहा है।

अध्याय 2 में वर्णित दो गोलों को स्मरण करें।

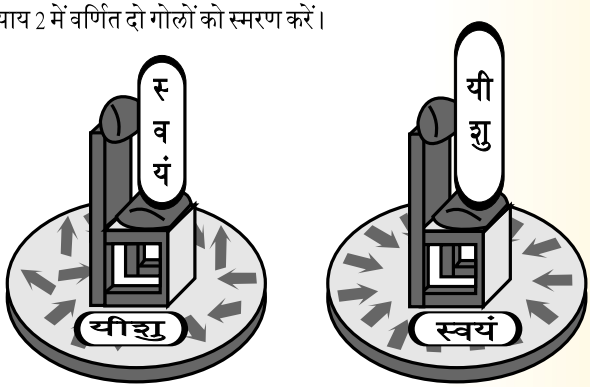

प्र कौन सा गोला आपके जीवन को प्रदर्शित करता है ? _____

यदि मसीह आपके जीवन को दिशा प्रदान कर रहा है, तो इसके प्रतिफल के रूप में आपके चाल-चलन और बातचीत दोनों बदल जाएंगे। दूसरे शब्दों में, आपका चरित्र काफी कुछ मसीह के चरित्र के समान हो जाएगा और आपके वचन और कार्य भले और उसके समान प्रतीत होंगे।

चाल-चलन

हम पहले भी देख चुके हैं कि मसीह के प्रति आज्ञाकारिता का जीवन उसके वचन में विश्वास करने पर आधारित है। आप और मैं मसीही जीवन को अपनी सामर्थ्य के अनुसार जीने में पूरी तरह से असमर्थ हैं। हालांकि उसकी प्रतिज्ञाओं में विश्वास करने के द्वारा, पवित्र आत्मा हमें परीक्षाओं और बुरे दौर पर विजयी होने की सामर्थ्य देता है। जैसे ही हम अपना जीवन उसको समर्पित करते हैं वह हमें उसके योग्य होने के अनुरूप बना लेता है।

यीशु हमसे पूर्णतया भिन्न है। आइए, उसकी कुछेक भिन्नताओं पर दृष्टि करें :

मसीह है :	मनुष्य है :
पवित्र	पापी
प्रेमी	प्रेम न करने वाला
नम्र	घमण्डी
क्षमा करने वाला	क्षमा न करने वाला
आज्ञाकारी	आज्ञा न मानने वाला

लेकिन इन सभी भिन्नताओं के बावजूद भी पवित्र आत्मा लगातार हमें मसीह के स्वरूप में ढालता रहता है। पौलुस गलतियों 4:19 में क्या कहता है ?

व्यक्तिगत पवित्रता

परमेश्वर का सर्वोच्च गुण पवित्रता है, जिसका अर्थ है कि वह नैतिक रूप से शुद्ध और धर्मी है, किसी भी अशुद्ध विचार या कार्य से स्वयं को उसने पृथक कर रखा है।

पवित्र आत्मा हमारे जीवन में सभी दुष्कर्मों और लालसा भरे विचारों को दूर करने का कार्य कर रहा है।

नैन्सी डी मॉस लिखती हैं, ''सच्ची पवित्रता भीतर से शुरू होती है - हमारे विचारों, गुणों, मूल्यों और उद्देश्यों के साथ- हमारे मन के वे भीतरी हिस्से जिन्हें केवल परमेश्वर ही देख सकता है। यह हमारे बाहरी और दिखायी देने वाले स्वभाव को भी प्रभावित करते हैं, अतः अपने सम्पूर्ण चरित्र में पवित्र बने रहो''।

प्र 1 पतरस 1:15 व 16 में पतरस क्या कहता है ?

प्र 1 कुरिन्थियों 6:18-20 में पौलुस क्या कहता है ?

दूसरों के प्रति प्रेम

पवित्र आत्मा अपना अलौकिक प्रेम हमें दूसरों को देने के लिए सक्रियता से कार्य कर रहा है। उसका प्रेम न्याय से बढ़कर क्षमाशील है, क्रोध की अपेक्षा धीरजवन्त है और दूसरों पर शीघ्रता से क्रोधित होने और डाह पैदा करने की अपेक्षा तरस खाने वाला है। कोरी टेन बूम केवल तभी कैदखाने के उस सुरक्षाकर्मी को जिसने उनके साथ दुर्व्यवहार और नीचा दिखाने एवं अपशब्द कहने का कार्य किया था, प्रेम करने में समर्थ हो सकी थी जब उन्होंने विश्वास में भरकर उसे प्रेम करना चुना।

बहुत से मसीहियों में यह सामर्थ्य तो होती है कि वे बाहरी तौर से प्रेम के दिखावे को भली प्रकार से उजागर कर लेते हैं। परन्तु अन्दर ही अन्दर वे द्वेष और रोष को दबाये रखते हैं। मसीह का प्रेम इससे पूर्णतया भिन्न है; इसकी शुरुआत हमारे हृदय से आन्तरिक रूप से होती है।

हालांकि हमारे लिए यह असम्भव है कि हम अपने पापी स्वभाव में सामान्य रूप से सुधार कर सकें ! आज्ञाकारिता का हमारा कार्य हमारे जीवन को पवित्र आत्मा को समर्पित करना है, और उसे हमें मसीह के समान बनाने देना है।

प्र पौलुस गलतियों 3:3 में क्या कहता है ?

प्र गलतियों 2:20 में पौलुस द्वारा दिया गया समाधान क्या है ?

प्र मसीह - केन्द्रित जीवन किसके समान प्रतीत होता है ? (गलतियों 5:22)

प्र मसीह में आपके चाल-चलन के कौन से क्षेत्र इस प्रकार परिवर्तित हो गये हैं कि काफी कुछ आप उसके समान लगने लगे ?

प्र कौन से क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें परिवर्तन नहीं हुआ है और जिनको उसे समर्पित कर देने की आवश्यकता है ?

प्र क्यों न अब उन क्षेत्रों को पवित्र आत्मा के सुपुर्द कर दिया जाए ? उन क्षेत्रों की सूची बनाएं जिन्हें आपको उसे सुपुर्द कर देने की आवश्यकता है :

बातचीत

मुझे और आपको यीशु मसीह के अनुयायी होने के नाते यह विशेष सुविधा मिली हुई है कि अनन्त जीवन का सुसमाचार दूसरों में बांट सकें। दूसरों को मसीह के लिए जीतने में अद्भुत आनन्द की प्राप्ति है।

''यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ.....''।

मत्ती 28:18,19अ

जब आप अपनी दौड़ को दौड़ने में लगे हुए हैं, तो मसीह की उस आज्ञा को जो सभी विश्वासियों के लिए..... जिसमें आप भी शामिल हैं, याद रखें।

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि दूसरों को मसीह के लिए जीतने में किस प्रकार अपने जीवन को लगाएं ताकि प्रभु के महान् कार्य को पूरा कर सकें।

आपका सबसे बड़ा निवेश

क्या आपने कभी अपने जीवन को एक निवेश के रूप में सोचा है ? यीशु ने ऐसा किया। वह निरन्तर आपके जीवन की तुलना पूंजी निवेश से करता आ रहा है।

यीशु चाहता है कि आप अपने जीवन का निवेश एक ऐसे बड़े लाभ की वापसी के लिए करें जो सम्भव है। वह अपने राज्य के निर्माण के लिए आपकी सहायता करना चाहता है।

प्र आप अपने जीवन का निवेश कैसे कर रहे हैं ?

तीन दास

(लूका 19:12-27)

यीशु ने एक राजकुमार की कहानी सुनाई जो कि अपने तीन दासों को बहुत सा धन देकर छोड़ गया ताकि वे उसके लिए पूंजी का निवेश करें। वर्षों बाद वापस आकर उसने उनके साथ हिसाब-किताब करने की बात उन से कही थी। जब लेन-देन का समय आया, और उनकी विश्वासयोग्यता का इनाम देने का समय आया, राजकुमार ने उनसे लेन-देन करने के बारे में पूछा :

पहले दास ने कहा, ''मालिक, मैंने आपके धन का दोगुना कमाया''।

राजकुमार ने हर्षित होकर कहा, ''उत्तम कार्य ! क्योंकि तुमने मेरी इस छोटी सी पूंजी-निवेश से मेरे लिए काफी धन कमाया है, मैं तुम्हें दस नगरों का अधिकार सौंपता हूं''।

दूसरे दास ने कहा, ''मालिक, मैंने आपके धन पर पचास प्रतिशत लाभ कमाया है''। राजकुमार ने उससे पूछा, ''मैं तुम्हें पांच नगरों का अधिकारी बनाऊंगा''।

तीसरे दास ने कहा, ''मालिक, यह आपका धन सुरक्षित और जस का तस है। मैंने इसे तहखाने में छिपा दिया था क्योंकि मुझे डर था कि मैं इसे खो न दूं। मैं आपको जानता हूं..... आप मूर्खों के साथ नहीं ठहरते''।

राजकुमार अत्याधिक निराश हुआ..... और उससे कहा, ''तुम ठीक कहते हो कि मैं मूर्खों के साथ नहीं ठहरता..... और तुम मूर्ख साबित हुए हो ! तुमने बचत खाते में इस धन को क्यों न जमा कर दिया ताकि उस पर मुझे कुछ ब्याज ही मिल जाता ?''

तब दूसरे लोगों की ओर मुड़कर, जो उसके पास खड़े थे, राजकुमार ने आज्ञा दी, ''इस दास से धन वापस ले लो, और उसको दे दो जिसने सबसे अधिक कमाया है''।

उन्होंने विरोध किया, और कहा, ''लेकिन मालिक, उसके पास तो दोगुना पहले से ही .....''

तब राजकुमार ने कहा, ''मेरा यही मतलब है : अपने जीवन में जोखिम स्वयं उठाओ और उससे भी अधिक पाओ जिसका कभी तुमने सपना भी देखा हो। इस खेल को सावधानी से खेलो और इसके अन्त के रूप में एक भरा झोला उठाओ''।

(लूका 19:26 द मैसेज)

यीशु ने अपने शिष्यों को यह कहानी उनके सामने इस बात का एक चित्र खींचने के लिए बतायी कि परमेश्वर हमारे जीवनों से लाभ की आशा करता है। दूसरे शब्दों में,

वह चाहता है हम अपने जीवन के दिन उसके लिए ''गिनते'' रहें

इस पृथ्वी पर का जीवन क्षणभंगुर है। जल्द ही यह समाप्त हो जाएगा - तब मसीह के लिए अपने जीवन का निवेश करने में बहुत देर हो चुकी होगी।

मसीह का न्याय सिंहासन

बाइबिल में बहुत ही स्पष्ट रूप से यह बात बतायी गयी है कि जब आपका जीवन समाप्त हो जाएगा, तो आपको मसीह के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होने का एक बड़ा सम्मान प्राप्त होगा और आप मसीह में अपनी विश्वासयोग्य सेवा के लिए उपहार प्राप्त करेंगे। सभी विश्वासी लोग मसीह में अपने चाल-चलन का लेखा देंगे, लेकिन दुर्भाग्य से सभी उपहार को प्राप्त करने वाले नहीं होंगे।

प्र 1कुरिन्थियों 3:11-15 में पौलुस क्या कहता है ?

यीशु चाहता है कि आप अपने जीवन का निवेश जितना सम्भव हो सके उतना अधिक उसके राज्य को प्रभावशाली बनाने के लिए करें। उस राजकुमार के समान जिसने अपने पहले दास को पुरस्कृत किया जिसने उसके निवेश को दोगुना कर दिखाया। यीशु आपको उपहार देने की एक

अपने क्षेत्र को बढ़ाएं

याबेस की प्रार्थना में, लेखक ब्रूस विलकिंसन तुलनात्मक रूप से अनुभव के द्वारा इस बात का वर्णन करते हैं कि याबेस, पुराने नियम का एक अनजान व्यक्ति, परमेश्वर से ''देश को बढ़ाने'' के लिए कहता है। (1 इतिहास 4:9 व 10)

याबेस परमेश्वर के लिए विशेष व्यक्ति बनना चाहता था। वह अपने जीवन का निवेश उत्तम लाभ के लिए करना चाहता था। (यह पुस्तक आपको बहुत ज़्यादा प्रोत्साहित करेगी)

डी.एल. मूडी वह व्यक्ति थे, जिन्होंने परमेश्वर से उनके क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कहा। उन्होंने यह बात कही :

''संसार को अभी भी ऐसे मनुष्य को देखना शेष है जो यीशु मसीह के लिए पूरी तरह से बिका हुआ हो और उसके काम को पूरा कर सके। परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं वह मनुष्य बनना चाहता हूं''।

- डी.एल. मूडी

प्र आप परमेश्वर से किस ''क्षेत्र'' की मांग आपको देने के लिए कर रहे हैं ?

मसीह के राजदूत

पवित्र शास्त्र के अध्याय में पौलुस कुरिन्थुस के विश्वासियों को मसीह के न्याय सिंहासन के विषय में तो बताता ही है, वह उन्हें एक और अद्भुत सत्य के बारे में बताता है ?

''हम मसीह के राजदूत हैं''

2 कुरिन्थियों 5:20 अ

एक देश एक राजदूत को दूसरे राष्ट्र में जाकर सर्वोच्च रीति से अपने देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनता है। एक राजा या राष्ट्रपति द्वारा एक उत्तम प्रतिनिधि का चुनाव करने में विशेष सावधानी बरती जाती है।

आपके राजा ने आपको उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना है। आप परमेश्वर के चुने हुओं में से हैं ताकि आप उसके लिए दूसरों तक पहुंच सकें। आप मसीह के गवाह ठहराये गए हैं।

आप दो मूल रीतियों से मसीह के गवाह ठहरते हैं :

आपके ''चाल-चलन'' के द्वारा आपकी गवाही
आपकी ''बातचीत'' के द्वारा आपकी गवाही

उसकी सी चाल चलें

मसीह के साथ सम्बन्धों में आपके उन्नति करने का एक कारण यह है ताकि आपके चाल-चलन में दूसरे अन्य लोग मसीह को देख सकें। यह बात दूसरों के ऊपर गहरा प्रभाव डाल सकती है। यीशु ने कहा:

''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे-भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें''।

मत्ती 5:16

प्र मसीह के राजदूत होने के नाते होने के विषय में आपके विचार :

_____

_____

_____

_____

कार्य उन्नति पर है

इस बात की सच्चाई से मुंह न मोड़ें कि आप ''कार्य उन्नति पर है'' की प्रक्रिया में हैं और मसीह के विषय में दूसरों को बताना आप बन्द कर दें। मसीह के साथ नये सम्बन्ध को बनाने में आप शान्त बैठे रहे तो शैतान आपसे प्रेम रखने लगेगा।

ऐसे में हो सकता है कि आप मसीह के लिए नहीं जी रहे हों, तो भी आपका स्वभाव वैसा ही दिखाई देता रहेगा, और इस तरह से मसीह के बारे में बताना दूसरों को पाखण्ड लगने लगेगा।

प्र क्या कोई बात आपके साथ ऐसी भी है जो आपके मित्रों और अन्य लोगों को मसीह के बारे में बताने को आपको पीछे हटाती है ?

_____

_____

_____

_____

दूसरों को सुसमाचार के बारे में बताना

क्या आपने कभी यह सोचा है कि आप ऐसे कितने लोगों को जानते हैं जिनका बालकपन सा स्वभाव है या जो सामाजिक रूप से आपके सम्पर्क में आते हैं और चोट खाये हुए हैं ..... और अपने जीवन को एक भ्रम में जीते हैं ? वास्तव में, इनमें से कुछ लोग तो इतने मायूस हो जाते हैं कि सोच लेते हैं कि सब कुछ समाप्त हो रहा है। बॉब फिलिप्स भी ऐसे ही लोगों में से एक थे।

ठीक समय पर

बॉब फिलिप्स जब हाईस्कूल में थे तब से ही उनके पास वह सभी कुछ था जो उन्हें चाहिये था। एक करोड़पति का बेटा होने के नाते उन्हें पैसे की कोई समस्या नहीं थी। जब बॉब सोलह वर्ष के थे उनके माता-पिता ने उन्हें एक मंहगी जगुआर कार खरीद कर दी थी।

बॉब का एक अपना अलग ख़ास सा अन्दाज़ था। उसके आकर्षक नैन-नक्श और सम्मोहित कर लेने वाले व्यक्तित्व ने उसे ''मि. कूल'' और ..... कक्षा में सबके चहेते और चर्चित युवा का ख़िताब दे डाला था।

उसके दिलफेंक अन्दाज़ ने तो लड़कियों के होश ही उड़ा दिये थे। सबसे ज़्यादा ''मस्तमौला'' युवा होने की वज़ह से ही उसे एक खास वर्ग के क्लब का अध्यक्ष चुन लिया गया था।

क्योंकि बॉब के जीवन में बहुत कुछ अच्छा चल रहा था, इसलिए मुझे उसे अपनी गवाही देने में कोई

रुचि नहीं थी। मसीह में नया होने के नाते, मैंने व्यक्तिगत रूप से कभी किसी के सामने गवाही नहीं दी थी। मैंने सोचा कि मसीह में बालकपन का स्वभाव लिए हुए लोग सोचेंगे कि मैं बहुत निराले स्वभाव वाला..... या एक तरह से धार्मिक कट्टरपंथी व्यक्ति हूं। चूंकि बॉब मेरा सबसे करीबी मित्र था, तो मैंने सोचा कि अगर वह मसीह के बारे में जानना चाहेगा, तो खुद ही मुझसे ज़िक्र करेगा। वास्तव में, यह सिर्फ़ ''मुसीबत से बच निकलने'' वाली बात जैसा था।

जैसे-जैसे सप्ताह गुज़रते गये, मैंने महसूस किया कि मसीह की सच्चाई को बॉब से छुपाने की वजह से मैं उसका एक अच्छा मित्र नहीं बन पा रहा हूं। मैंने उसे बताया कि मसीह का मेरे जीवन में क्या महत्व है, और मैंने उसका परिचय अपनी संस्था यंग लाइफ के अगुवे ''डॉक'' से करवाया जिसने तब बॉब का ध्यान मसीह की ओर केन्द्रित किया।

सालों बाद, बॉब ने मुझसे यह झकझोर देने वाली सच्ची कहानी बांटी :

''मैं अपने जीवन के उस बिन्दु पर पहुंच चुका था जहां मैं यह सोचकर परेशान हो चुका था कि ज़िन्दगी में मुझे क्या मिलना बाकी बचा है। हर एक चीज़ मुझे आसानी से मिलती जा रही थी..... पैसा.... खिलौने..... मित्र..... लड़कियां..... ठोकरें। पर कुछ भी मुझे सन्तुष्ट नहीं कर सका। कुछ भी ऐसा इनमें से नहीं था जिससे मुझे सन्तुष्टि मिल सकती''।

और अन्ततः मेरे जीवन में वह दिन आ पहुंचा जब मैं यह सब खत्म होने देना चाहता था। मैंने परमेश्वर से मुझे यह दिखाने के लिए कहा कि क्या कोई ऐसी वजह है मेरे लिए जिसके लिए मैं जीवित रहूं। और तब मैंने यह निर्णय लिया कि एक सप्ताह तक मैं अपने जीवन का अन्त करने के निर्णय को टालता रहूंगा यदि परमेश्वर मुझे मेरे सवाल का जवाब दे देगा।

बॉब ने तब मुझे हैरत में डाल देने वाली बात बताई, ''यह उसी सप्ताह के दौरान हुआ जब तुमने मुझे मसीह के विषय में बतलाया..... और ''डॉक'' ने यीशु को मेरा व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता ग्रहण करने में मेरी अगुवाई की!''

सालों गुज़र चुके हैं, और बॉब और मैं अभी भी अच्छे मित्र हैं। और यह जानकर बहुत अच्छा लग रहा है कि हम साथ-साथ अनन्त जीवन को गुज़ारेंगे। वास्तव में सोचने लायक यह बड़ा ही भयानक विचार लगता है कि मसीह उससे कितना प्रेम करता है, इस बात को सुनने का अवसर मिलने से पहले वह मृत्यु के कितना निकट पहुंच चुका था।

प्र क्या आप कुछ ऐसे लोगों के विषय में याद कर सकते हैं जिनके साथ आपको मसीह के बारे में बताने का अवसर मिला हो ?

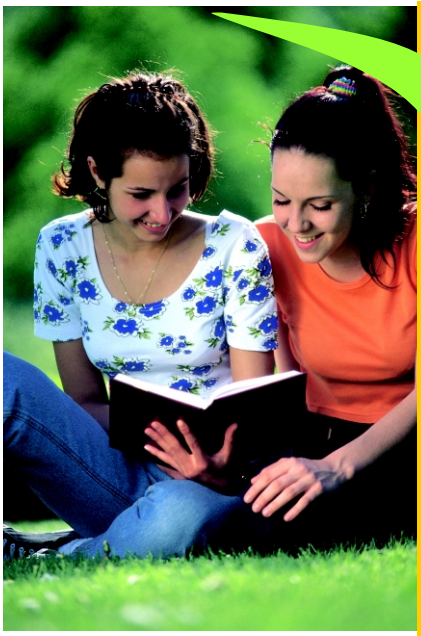

मसीह के विषय में दूसरों को कैसे बताएं

आपको बाइबिल का ज्ञाता होने की कोई आवश्यकता नहीं है, या मसीह की संगति का कई वर्षों का अनुभव होने की उसके लिए गवाही देने की कोई आवश्यकता नहीं है। बहुत से तरीके हैं जिनके द्वारा आप मौखिक रूप से प्रतिदिन के क्रिया कलापों के आधार पर मसीह के विषय में बता सकते हैं :

अनौपचारिक रूप से बताना

मसीह के विषय में प्रभावकारी रूप से बतलाने के लिए आपको सुसमाचार को प्रारम्भ से अन्त तक प्रस्तुत करना नहीं है। पवित्र आत्मा से कहें कि वह आपकी अगुवाई किसी ऐसे व्यक्ति तक पहुंचाने में करे जो खुले दिल से मसीह के विषय में और अधिक सुनना चाहता हो :

किसी मित्र को कलीसिया आने या युवा सभा में आने का निमन्त्रण दें।
अपनी व्यक्तिगत गवाही सामने रखें।
मसीह में किसी नवजात व्यक्ति को क्रिश्चियन कैम्प में भाग लेने को कहें।
किसी मित्र का परिचय अन्य मसीहियों से करवाएं।
मसीही पुस्तक या ट्रैक्ट्स बांटें।

अनौपचारिक रूप से गवाहियां देने का मार्ग खुला हुआ है.....
और परमेश्वर से आपकी अगुवाई करने के लिए कहें। वह करेगा !
वह इस बात को कहने के लिए आपकी प्रतीक्षा करता आ रहा है !

मसीह के दावों को सीधे प्रस्तुत करना

प्रत्येक व्यक्ति को एक अवसर की आवश्यकता होती है कि वह इस पूरी कहानी को सुन सकें कि परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से उसे कितना प्रेम करता है। जब आप एक बार ऐसे किसी व्यक्ति से अपना सम्बन्ध बना लेते हैं, और ''आपको सुने जाने का अधिकार प्राप्त कर लेते हैं'' तो उस अवसर की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें जब आप उन लोगों को मसीह के विषय में बता सकें।

अधिकतर लोग मसीहियत को ठुकरा देते हैं क्योंकि उन्हें ''इशारा ही नहीं मिलता'' कि यह सब किसके विषय में है या वे ग़लतफहमी का शिकार हो जाते हैं..... और यह सोचने लगते हैं कि यह मात्र एक ''धर्म'' है। उन्हें इस बात का अहसास ही नहीं होता कि यह उनके सृष्टिकर्त्ता..... यीशु मसीह के साथ उनका पूरी तरह से अद्‌भुत सम्बन्ध है !

गवाही देने का सबसे श्रेष्ठ तरीका..... जिससे कि लोग वास्तव में यह समझ सकें कि बाइबिल क्या कहती है..... यह है कि बाइबिल के सन्दर्भों और अपनी गवाही के द्वारा सुसमाचार का संक्षिप्त प्रस्तुतिकरण किया जाए।

नीचे दिए गए हिस्से में संक्षिप्त रूप से अपनी इस गवाही को लिखें कि कैसे आपने मसीह को ग्रहण किया, और कैसे अपने आपको बदल डाला (यदि आवश्यकता हो तो अलग पृष्ठ का भी उपयोग करें।)

प्रार्थना करें

''इससे पहले कि परमेश्वर के लिए मनुष्यों के पास जाओ, मनुष्यों के लिए परमेश्वर के पास जाओ.....'' अपने आपको पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में देने के लिए और उस व्यक्ति के हृदय को तैयार करने के लिए परमेश्वर से कहें।

सुसमाचार पुस्तिका का प्रयोग करें

संक्षिप्त रूप से बताने के क्रम में, और पथ-भ्रमित न हो जाने के लिये, बेहतर सुसमाचार पुस्तिकाओं का प्रयोग करें, जैसे कि बिल ब्राइट (न्यू लाइफ पब्लिकेशन्स) द्वारा लिखित द फोर स्प्रीचुअल लॉज (चार आत्मिक नियम) या द ब्रिज (एक पुल), (नेव प्रेस)। आप इस पुस्तिका का अध्याय एक भी प्रयोग में ला सकते हैं।

बाइबिल का प्रयोग करें

अपने साथ एक छोटी बाइबिल रखा करें जिसकी मुख्य आयतें सुसमाचार के हरेक बिन्दु के लिए मुख्य पदों को स्मरण रखने का प्रयास करें।

अपनी व्यक्तिगत गवाही बांटें

अपनी व्यक्तिगत गवाही लिख लें और किसी मित्र के सामने इसे 3 से 5 मिनटों में आप सामान्य तरीके से प्रस्तुत करें। इसे मुख्य विचारधारा से जोड़ें रहें कि कैसे मसीह ने आपके जीवन को बदला है..... और वह आपके लिए कितना अद्भुत है। उत्साहित बने रहें..... लेकिन ढोंगी नहीं। पारदर्शी बने रहें..... और उन्हें जानने दें कि आप ''जो दिख रहे हैं, वही है''।

मुख्य विचारधारा में बने रहें

जब आप एक अविश्वासी के संग मसीह के विषय में बात करते हैं तो आप एक आत्मिक युद्ध लड़ते हैं। कई असामान्य रुकावटें आ सकती हैं..... या वह मनुष्य वाद-विवाद करके आपको मुख्य धारा से भटकाने की कोशिश कर सकता है। प्रार्थना करें, और मसीह के प्रेम..... और ऐसे लोगों के लिए उसकी क्रूस पर की मृत्यु की मुख्य विचारधारा पर केन्द्रित रहें। इस बात पर बल दें कि परमेश्वर के लिए वे कितने महत्वपूर्ण हैं।

निर्णय लेने के लिए पूछें

जैसे-जैसे पवित्र आत्मा अगुवाई करता जाता है। आशा रखें, कि परमेश्वर उनके हृदयों में काम कर रहा होगा। निम्न में से किसी एक प्रश्न को पूछें :

''क्या इस बात का आपके लिए महत्व है ?''
''क्या आप परमेश्वर की इस भेंट को स्वीकार करना चाहेंगे ?''
''क्या आप स्वयं को निश्चित करना चाहेंगे ?''
''क्या आप यीशु को अपने जीवन में आने के लिए कहना चाहेंगे ?''

प्रार्थना में उनकी अगुवाई करें

यदि वे मसीह को ग्रहण करने के लिए तैयार हैं, तो उनके साथ प्रार्थना करें। आपकी लघु पुस्तिका या इस पुस्तिका के अध्याय एक में दी गयी प्रार्थना का प्रयोग करें।

अगला कदम

जब एक बार कोई व्यक्ति यीशु के पास आ जाता है तो, यह बात महत्वपूर्ण है कि आप उन लोगों को दिखाएं कि ''वर्ग पहेली'' के ये ''हिस्से'' कैसे एक दूसरे के साथ उचित रीति से जुड़ जाते हैं। उनके साथ इस पुस्तिका के अध्ययन के लिये समय का निर्धारण करें।

यह भी महत्वपूर्ण है कि वे शीघ्र ही अन्य मसीहियों के साथ ''जुड़ जाएं''..... ऐसे लोग जिनके साथ वे संगति भी रख सकें।

अधिकार को सौंपना

जब आप किसी व्यक्ति की अगुवाई उसे मसीह की निकटता में लाने में करते हैं, तो आप उन्हें ''अधिकार सौंप'' रहे होते हैं। परमेश्वर के वचन से उन्हें शिष्यता के वे सिद्धान्त सिखाएं जो पौलुस ने तीमुथियुस को सिखाए थे, ताकि वे इनको अन्य लोगों को सौंप दें :

''और जो बातें तूने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे : जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों''।

2 तीमुथियुस 2:2

उन लोगों के लिए जो परमेश्वर के वचन को गम्भीरता से लेते हैं..... और शिष्यता ग्रहण करना चाहते हैं, इस बात की दृढ़ता से सलाह दी जाती है कि आप बाइबिल के विषय में अधिक गहराई से जानने के लिए नियमित सभाओं हेतु समय निर्धारित करें (कम से कम हर दूसरे सप्ताह)। एक नये विश्वासी के लिए एक छोटे सामूहिक बाइबिल अध्ययन और एक पर एक शिष्यता प्रक्रिया की सलाह दी जाती है।

जीतने के लिए दौड़ें

हालांकि यह अध्याय इस अध्ययन को समाप्त कर देता है, फिर भी आपकी दौड़ चलती रहती है ! अभी मीलों दूर दौड़ना है।

अब आप देखते हैं कि कैसे इस ''वर्ग पहेली'' का हर एक ''टुकड़ा'' मसीह में आपकी उन्नति के लिए महत्वपूर्ण है..... उस अद्‌भुत जीवन के लिए जो मसीह चाहता है आप जियें, ये सभी योगदान दे रहे हैं।

मैराथन दौड़ को दौड़ने वाले धावक लम्बी दूरी की दौड़ के दौरान थक कर चूर-चूर हो जाते हैं। कुछ तो दौड़ना छोड़ देते हैं। जो लोग दृढ़ता से दौड़ को पूरा करते हैं, अपना ध्यान उस अन्तिम रेखा की ओर केन्द्रित रखते हैं..... उन्हें मिलती है अच्छी तरह पूरा करने की सन्तुष्टि, और पुरस्कार।

परमेश्वर का वचन आपको बताता है कि दृढ़ता से इसे कैसे पूरा करें :

''..... आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु..... को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा''।

प्र किस वस्तु का भार आपकी गति को धीमा करता रहता है ?

प्र एक अच्छी दौड़ को दौड़ने के प्रति आश्वस्त होने के लिए आपने क्या बदलाव किये हैं ?

प्र सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है जो आपने इस अध्ययन में सीखी है ?

तो..... क्या टुकड़े एक साथ जुड़ रहे हैं ?

अब तक आपको इस बात की अच्छी समझ हो जानी चाहिए कि पूर्ण हो चुकी ''वर्ग पहेली'' का ''चित्र'' कैसा दिखता है।

जब मसीह आपके जीवनों का केन्द्र होगा, हर एक बात अलग सी हो जाएगी। आपका जीवन आनन्द और शान्ति से भर उठेगा। आप उसे प्रसन्न रखना चाहेंगे। यदि आपके शत्रु भी हों, तो परमेश्वर आपके हृदय में दूसरों के लिए प्रेम उत्पन्न करेगा।

परमेश्वर आप और मुझ जैसे साधारण लोगों को चुन सकता है..... और हमारे जीवनों को पूरी तरह से अद्भुत और असाधारण बना देता है। यही वह परम जीवन है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर हरेक उस विश्वासी से करता है जो उस पर भरोसा करते और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं।

''अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है''।

इफिसियों 3:20

क्या आप इन सभी बातों का जोखिम मसीह के लिए उठाने को तैयार हैं ? वह पूरी तरह से विश्वासयोग्य है..... और आपकी दौड़ के प्रत्येक मील के फासले पर आपके साथ बना रहेगा..... यहां तक कि जब आप थक कर चूर-चूर हो चुके होंगे और अलग हो जाने का अहसास कर रहे होंगे।

''परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे''।

यशायाह 40:31

परमेश्वर की इच्छा है कि आप दौड़ते रहें। अच्छी तरह दौड़ें, और पुरस्कार को पाएं ! (1 कुरिन्थियों 9:24-26)

परमेश्वर के पास
आपके लिये बड़ी योजनाएं हैं !

(यिर्मयाह 29:11)

हरेक पल परम जीवन को जिएं

अन्तिम कुछ पृष्ठों में परमेश्वर के वचन से हम यह सीखेंगे कि उस दौड़ के दौरान जो आपके सामने रखी गयी है आप उन प्रत्येक परीक्षाओं और बाधाओं पर कैसे विजय प्राप्त कर सकते हैं जिनसे आपका सामना होता रहता है।

समस्या - 1 : ''मुझे ऐसा नहीं लगता कि मैं क्षमा किया गया हूं। मुझे अपने पापों से बड़ी घृणा आती है''

इसे स्मरण रखें !
इफिसियों 2:8,9
1 यूहन्ना 1:9
यशायाह 1:18

समाधान : अध्याय एक में यीशु के पूर्ण क्षमादान के विषय में पढ़ें।

समस्या - 2 : ''मैं क्यों अपने जीवन की सभी बातों और अपनी समस्याओं के कारण यीशु पर विश्वास करना कठिन महसूस करता हूं?''

इसे स्मरण रखें !
1 पतरस 5:7
फिलिप्पियों 4:13,19

समाधान : अध्याय 2 व 3 में पवित्र आत्मा की आपके लिए ईश्वरीय सहायता के विषय में पढ़ें। यीशु ही परमेश्वर है, और सब कुछ जानता है। वह आपकी चिन्ता करने की प्रतिज्ञा और आपकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने की प्रतिज्ञा करता है क्योंकि वह आपकी चिन्ता करता है। (आवश्यकताएं और अभिलाषाएं दोनों में अन्तर है।)

समस्या - 3 : ''मैं यह कैसे जान सकता हूं कि परमेश्वर मुझे भूल नहीं गया है, जब मैं परीक्षाओं और पतन का अनुभव करता हूं? यदि परमेश्वर मेरी चिन्ता करता है तो वह मेरी परीक्षाओं को मुझसे दूर क्यों नहीं ले जाता ?''

इसे स्मरण रखें !
यूहन्ना 16:33
याकूब 1:12
1 पतरस 1:7
1 पतरस 4:12,13

समाधान : परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि हम में से हर एक को परीक्षाओं और कठिन परिस्थितियों का अनुभव करना पड़ेगा। (जोनी को याद करें ?) स्वयं यीशु और उसके शिष्यों को भी बहुत सी परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा था और अन्ततः वे सभी अपने विश्वास के कारण घात किये गये। परन्तु परमेश्वर उनकी सभी परीक्षाओं के सभी समयों से उनके बीच उपस्थित रहा और उन्हें ईश्वरीय शान्ति और आनन्द प्रदान किया।

समस्या - 4 : ''मैं एक ही प्रकार के पाप से बारम्बार उबरने का तीव्र संघर्ष करता/करती आ रहा/रही हूं और ऐसा नहीं लगता कि मैं इससे स्वतंत्र हो सकूंगा/सकूंगी। पवित्र आत्मा किस प्रकार से मुझे उसकी आज्ञा मानने की सामर्थ्य देता है?''

इसे स्मरण रखें !
रोमियों 12:1,2
गलतियों 2:20
गलतियों 5:22

समाधान : आपको आपके जीवन के प्रत्येक विचार और कार्य में पवित्र आत्मा पर भरोसा करने का निर्णय लेना आवश्यक है। आत्मिक श्वास (अध्याय 3) का अभ्यास करें। आप अपने जीवन से पाप का खात्मा पूरी तरह से कभी नहीं कर पाएंगे/पाएंगी, लेकिन आप किसी भी क्षण अपने पाप का अंगीकार करने और पूरी क्षमा प्राप्त कर आगे चलने और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में होकर वास करने का निर्णय ले सकते/सकती हैं।

समस्या - 5 : ''मैं उस आनन्द और शान्ति का अनुभव क्यों नहीं करता/करती जिसकी प्रतिज्ञा यीशु अपनी सन्तानों को देने को करते हैं?''

इसे स्मरण रखें !
यशायाह 26:3
फिलिप्पियों 4:6,7
प्रेरितों के काम 20:24

समाधान : यह हम सभी लोगों के लिए बहुत ही आसान है कि हम यीशु से अपनी दृष्टि फेर लें और अपनी स्वयं की परिस्थितियों वश हतोत्साहित हो जाएं। यीशु चाहता है कि हम उसमें पूरा भरोसा और अपनी पूरी आशा रखें - इस संसार पर नहीं। जब हमारी दृष्टि उस पर होती है, वह अपनी शान्ति और आनन्द हमें देता है।

समस्या - 6 : ''मेरी प्रार्थनाओं के उत्तर क्यों नहीं मिल पा रहे हैं?''

इसे स्मरण रखें !
यूहन्ना 15:7
यूहन्ना 16:24
1यूहन्ना 5:14,15

समाधान : अध्याय 5 पढ़ें। परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देने की प्रतिज्ञा तभी करता है जब वे पवित्र उद्देश्य का प्रतिफल होती हैं और उसकी इच्छा और उद्देश्य के अनुसार मांगी जाती हैं। हालांकि परमेश्वर के तरीके और समय निर्धारण ठीक वैसा नहीं है जैसा कि हमारा है, और वह हमारे निवेदनों का उत्तर देने का समय तभी तय करता है जब उसके अनुसार उत्तम समय होता है।

हताश न हों, बल्कि परमेश्वर पर भरोसा रखें और अपनी विनतियों को उसके सम्मुख लाते रहें। कभी-कभी परमेश्वर के उत्तर देने का तरीका हमारी समझ से परे होता है और हम इस बात को महसूस नहीं कर पाते। एक न एक दिन हम उसके उद्देश्यों को भली भांति समझ जाएंगे, परन्तु तब तक, हमें उस पर भरोसा रखना है और प्रार्थना करते रहना है।

समस्या - 7 : ''मेरा ऐसा विश्वास है कि शैतान या दुष्टात्मा ने मुझ पर अधिकार किया हुआ है। मैं शैतान के प्रहार से कैसे निकाला जा सकता हूं/सकती हूं?''

इसे स्मरण रखें !
इफिसियों 6:11
1कुरिन्थियों 15:58
इफिसियों 5:18-20

समाधान : एक आज्ञाकारी मसीही के ऊपर शैतान की सामर्थ्य नहीं काम करती। हालांकि वह हम पर घात कर सकता है, पर जब हम आत्मा में होकर चल रहे होते हैं, वह सामर्थहीन हो जाता है। हालांकि, अनाज्ञाकारी मसीही जो उसके (परमेश्वर) के हथियारों को नहीं बान्धता, शैतान के प्रहार से बच नहीं सकता (पढ़ें इफिसियों 6:10-18)। शैतान को हराने का सबसे उत्तम मार्ग मसीह की आज्ञा का सम्पूर्ण रीति से पालन करके चलना है।

दुष्टों के अत्याचार का अन्त करने की स्थिति में, किसी को कलीसिया के अगुवों को आपके लिए प्रार्थना करने के लिए बुलाना चाहिए। जब परमेश्वर आपके जीवन का संचालन करता है तो न ही शैतान और न ही उसके दुष्टों को आप पर अधिकार होता है न ही आप पर इनकी सामर्थ्य काम करती है। इस विषय में आपको परमेश्वर के वचन पर भरोसा करने की आवश्यकता है। 2 कुरिन्थियों 10:3-5 पढ़ें।

समस्या - 8 : ''कड़ी परीक्षाओं का सामना करते हुए मैं कैसे एक आज्ञाकारी जीवन जी सकता/सकती हूं?''

इसे स्मरण रखें !
फिलिप्पियों 1:6
2कुरिन्थियों 5:14,15
यूहन्ना 14:21

समाधान : अध्याय 2 व 3 को दोहराएं और इस बात के प्रति आश्वस्त हो जाएं कि आपने अपने जीवन को पवित्र आत्मा को सौंप दिया है। आज्ञाकारिता केवल तभी आएगी यदि आप क्षण प्रतिक्षण अपने जीवन को पवित्र आत्मा की अधिकता में सौंपते हैं।

जब आप परमेश्वर के वचन को पढ़ते और उसे स्मरण रखते हैं, अन्य विश्वासियों के साथ प्रार्थना करते, संगति रखते हैं और परमेश्वर के प्रेम को दूसरों के साथ बांटते हैं तो परीक्षाओं से उबरने की सामर्थ्य बहुतायत से बढ़ जाती है। अपना प्रत्येक दिन उसके साथ शुरु करें और दिन भर आत्मिक श्वास लेते रहें।